YouTube AJJ KA MUDDA
राष्ट्रीय हिंदी दैनिक समाचार पत्र
Website : www.aajkamudda.com
Email:muddaaajka@gmail.com

आज का मुद्दा

नोएडा गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित
नजर आपकी खबर आपकी

वर्ष : 15 अंक 31 | नोएडा गौतमबुद्धनगर, बुधवार 19 फरवरी 2025 | RNI-No. UPHIN/2011/37197 | पेजः 8 मूल्य : 2 रुपया

‘मृत्यु कुंभ’ में बदल गया है प्रयागराज महाकुंभ: ममता

गरीब तरस रहे, ‘वीआईपी’ को मिल रहीं खास सुविधाएं

कोलकाता (एजेंसी)। प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा, ‘यह महाकुंभ मृत्यु कुंभ’ में बदल गया है। मैं महाकुंभ का और पवित्र गंगा मां का सम्मान करती हूं। उन्होंने कहा कि महाकुंभ के लिए कोई प्लानिंग नहीं की गई है। भगदड़ में कई लोग मारे गए लेकिन कितने उनके बारे में कुछ पता नहीं चल रहा है। कई लोग मिले ही नहीं। ममता ने कहा– महाकुंभ में अमीरों और वीआईपी लोगों के लिए 1 लाख रुपए तक के टेंट मौजूद हैं। गरीबों के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। मेले में भगदड़ की स्थिति आम है, लेकिन व्यवस्था करना जरूरी है। आपने (यूपी सरकार) क्या

योजना बनाई है। ममता ने यह बयान विधानसभा में बजट सत्र के दौरान दिया। इससे पहले लालू प्रसाद यादव कुंभ को फालतू कह चुके हैं। ममता ने कहा– अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब सांप्रदायिकता के बारे में बोलना या किसी धर्म के खिलाफ भड़काना नहीं है। आप एक विशेष धर्म को बेच रहे हैं। मैंने यहां कुछ वीडियो देखे हैं जिसमें उन्होंने (विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी) कहा कि वह हिंदू धर्म के बारे में बोल रहे हैं और इसलिए उन्हें सदन से निलंबित कर दिया गया है। मैं कभी भी किसी धार्मिक मामले को भड़काने की बात नहीं करती। भाजपा अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए धर्म का इस्तेमाल कर रही है।

राष्ट्रपति भवन में कतर के अमीर का जबरदस्त स्वागत

● गार्ड ऑफ ऑनर मिला, राष्ट्रपति के साथ पीएम रहे मौजूद ● हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री मोदी से की द्विपक्षीय बातचीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कतर के अमीर तमीम बिन हमाद अल-थानी का मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और पीएम मोदी ने स्वागत किया। इस दौरान उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कतर अमीर ने सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों से भी मुलाकात की। अमीर अल-थानी और पीएम मोदी के बीच हैदराबाद हाउस में बैठक हुई। केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी, पीयूष गोयल, निर्मला सीतारमण, मनसुख मंडाविया और पीके मिश्रा इस बैठक का हिस्सा थे। दोनों पक्षों ने व्यापार, प्रौद्योगिकी और निवेश में कई समझौता ज्ञापनों का भी आदान-प्रदान किया। अमीर अल-थानी कल रात यानी 17 फरवरी को भारत पहुंचे थे। खुद पीएम मोदी प्रोटोकॉल तोड़कर उन्हें रिसीव करने दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहुंचे थे। इस दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर भी मौजूद थे। कतर के

अमीर 17 फरवरी को दो दिन की भारत यात्रा पर पहुंचे हैं। यह अमीर की कतर की दूसरी भारत यात्रा है। इससे पहले वे मार्च 2015 में भारत आए थे। कतर अमीर अल-थानी की इस यात्रा का मकसद द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना है। साल 2024 के अंत में विदेश मंत्री एस जयशंकर कतर पहुंचे थे। यहां उन्होंने कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री से मुलाकात की थी।

रमजान में 4 बजे ही मुस्लिम कर्मचारियों को मिलेगी छुट्टी

● तेलंगाना में कांग्रेस सरकार के आदेश से बीजेपी आगबबूला

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना की रेवंत रेड्डी सरकार ने रोजेदारों को रमज़ान के महीने में बड़ा तोहफा दिया है। कांग्रेस सरकार ने रमजान के दौरान मुस्लिम कर्मचारियों के काम के घंटे कम करने का ऐलान किया है। इसके बाद से तेलंगाना की राजनीति पारा अचानक गरम भी हो गया है। इस फैसले पर बीजेपी ने तीखी प्रतिक्रिया दी है और इसे कांग्रेस का तुष्टिकरण करार दिया है। बीजेपी ने सवाल उठाते हुए कहा है कि नवरात्रि के व्रत के दौरान हिंदुओं को ऐसी कोई छूट नहीं दी जाती है। इस बीच, तेलंगाना का अल्पसंख्यक कल्याण विभाग रमज़ान के पवित्र महीने के लिए ऐतिहासिक मक्का मस्जिद और शाही मस्जिद में व्यापक इंतजाम कर रहा है। रमजान का पवित्र महीना एक या दो मार्च से शुरू हो सकता है। यह चांद दिखने के हिसाब से तय होगा, मगर इससे पहले तेलंगाना के मुख्य सचिव ने मुस्लिम कर्मचारियों के लिए एक आदेश जारी किया

है। इस आदेश के अनुसार, मुस्लिम कर्मचारियों को रमजान के महीने में एक घंटा पहले ऑफिस से जाने की अनुमति होगी।

अयोध्या राम मंदिर पर उड़ रहे ड्रोन को मार गिराया

पुलिस को शक-भगदड़ मचाने की साजिश हो सकती है

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर परिसर में भीड़ के बीच उड़ रहे ड्रोन को मार गिराया है। सोमवार शाम गेट नंबर-3 पर ड्रोन उड़ता हुआ पहुंच गया था। उस वक्त रामलला के दर्शन के लिए जबरदस्त भीड़ थी। सूत्रों के मुताबिक, एंटी-ड्रोन सिस्टम ने ड्रोन को मार गिराया। इसके बाद सुरक्षा कर्मी अलर्ट हो गए। बम स्क्वॉड टीम को बुलाया गया। ड्रोन की जांच की गई। ड्रोन कैमरा उड़ाने वाले की तलाश की जा रही है। अयोध्या पुलिस को शक है कि यह भगदड़ मचाने की साजिश हो सकती है, क्योंकि राम मंदिर क्षेत्र में ड्रोन उड़ाना प्रतिबंधित है। यहां तक कि हवाई जहाज तक को मंदिर के ऊपर से उड़ने की परमीशन नहीं है। अयोध्या के कटरा चौकी इंचार्ज सुनील कुमार ने राम जन्मभूमि थाने में इस मामले में एफआईआर दर्ज कराई है।

ओ0टी0एस0 योजना मे, उपभोक्ताओं को मिल रहा है, बिजली के बिलों मे लगे सरचार्ज पर छूट का लाभ

- प्रबन्ध निदेशक ने किया विद्युत उपभोक्ताओं से, एकमुश्त समाधान योजना का लाभउठाने का आह्वान।
- एकमुश्त समाधान योजना का लाभ लेने से वंचित पात्र उपभोक्ता, आज ही पंजीकरण करायें और सरचार्ज मे छूट का लाभ उठायें।

मेरठ, 18.02.2025। घरेलू, वाणिज्यिक, निजी संस्थान, औद्योगिक श्रेणी के विद्युत उपभोक्ताओं को बकाया विद्युत बिल को जमा करने मे बडी राहत देते हुए, उ०प्र० सरकार द्वारा विद्युत उपभोक्ताओं के लिए लागू एकमुश्त समाधान योजना मे तृतीय चरण की अवधि दिनांक 16.02.2025 से 28.02.2025 तक (15 दिवस) के लिए विस्तारित की गयी है। योजना के तहत बिजली के बिलों में लगे सरचार्ज पर छूट का लाभ प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 15 फरवरी 2025 निर्धारित की गयी थी जिसे अब 28 फरवरी 2025 तक विस्तारित किया गया है। उपभोक्ता योजना मे निर्धारित तिथि के अनुसार पंजीकरण कराकर, योजना का लाभ उठा सकते हैं। इस संबंध मे प्रबन्ध निदेशक श्रीमती ईशा दुहन, आई०ए०एस० ने उपरोक्त श्रेणी के सभी बकायेदार विद्युत उपभोक्ताओं से आह्वान किया है कि यदि योजना मे, कोई पात्र उपभोक्ता एकमुश्त समाधान योजना का लाभ लेने से वंचित रह गया है तो शीघ्र अपने नजदीकी खण्ड / उपखण्ड कार्यालय से संपर्क कर, योजना का लाभ उठायें। उपभोक्ता योजना मे 30 प्रतिशत धनराशि जमा करा कर, पंजीकरण करा सकते हैं तथा. शेष धनराशि को एकमुश्त अथवा किश्तों में जमा कराने की सुविधा प्रदान की गयी है। उपरोक्त श्रेणी के बकायेदार उपभोक्ताओं से अपील की जाती है कि सरचार्ज मे छूट के अन्तिम स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने के लिए, आज ही पंजीकरण करायें और सरचार्ज मे छूट का लाभ उठायें। उपभोक्ताओं मे योजना के प्रति भारी उत्साह है, विभाग को योजना से सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं, अब तक दस लाख उनसठ हजार पाँच सौ अठाइस उपभोक्ताओं द्वारा पंजीकरण करा कर, सरचार्ज मे छूट का लाभ उठाया जा चुका है। बकायेदार उपभोक्ता अपने नजदीकी खण्ड / उपखण्ड कार्यालय, कैश काउण्टर, जनसेवा केन्द्र एवं विभागीय वेबसाईट ६६६.४स्र्स्रू'.ङ्म१ पर आज ही पंजीकरण कराकर छूट का लाभ उठा सकते हैं। योजना के बारे में किसी भी शंका के समाधान हेतु, पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम लि० के हेल्प लाइन नंबर 1912 एवं टोल फ्री नम्बर 18001803002 पर संपर्क कर, योजना के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

महाराष्ट्र में बीजेपी-शिवसेना के बीच बढ़ती जा रही है दूरी!

सुरक्षा में कटौती किए जाने से नाखुश हैं शिंदे के विधायक

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में हमेशा राजनीतिक हलचल मची रहती है। नवंबर महीने में महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन की प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनी। उसके बाद देवेंद्र फडणवीस को राज्य का मुख्यमंत्री बनाया गया। बताया जा रहा है कि इससे पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे नाराज हैं। गठबंधन में शिवसेना शामिल है। इस बीच एक बार फिर से बड़ी खबर आई है। शिवसेना के करीब 25 मौजूदा और पूर्व विधायकों की सिक्योरिटी में कटौती करने का फैसला महाराष्ट्र पुलिस ने किया है। इसको लेकर शिवसेना नेताओं ने नाराजगी जाहिर की है। कुछ नेताओं का दबी जुबान में कहना है कि देवेंद्र फडणवीस की सरकार में उन्हें साइडलाइन किया जा रहा है। बता दें कि गृह मंत्रालय की जिम्मेदारी देवेंद्र फडणवीस के पास ही है।

सऊदी में यूक्रेन युद्ध विराम के लिए शुरू हुई बातचीत

जेलेंस्की को किया किनारे, ट्रंप की चाल से टेंशन में यूरोप

रियाद (एजेंसी)। अमेरिका और रूस के अधिकारियों ने सऊदी अरब में यूक्रेन युद्ध मुद्दे पर बैठक की है। रियाद में मंगलवार को हुई इस बैठक में रूस की तरफ से विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के विदेश नीति सलाहकार यूरी उशाकोव शामिल हुए। अमेरिका की ओर से विदेश मंत्री मार्को रुबियो, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार माइक वाल्ट्ज और पश्चिम एशिया के लिए

डोनाल्ड ट्रंप के विशेष दूत स्टीव विट्कॉफ बैठक में मौजूद रहे। यूक्रेन को इस बैठक में नहीं बुलाया गया है, जिस पर यूरोप की ओर से फिक्र जाहिर की गई है। फर्स्ट पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी अरब में यह बैठक यूक्रेन पर रूसी हमले के तीन साल बाद हो रही है। अमेरिका की शांति समझौते में भूमिका की वजह से इसे अहम माना जा रहा है। अमेरिकी विदेश विभाग और रूस के अधिकारियों में बातचीत राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच हाल ही में फोन पर चर्चा के बाद हो रही है।

यूपी की जीडीपी में 3.50 लाख करोड़ रुपए जोड़ेगा महाकुंभ

हिट हो गया सीएम योगी का स्प्रिचुअल टूरिज्म वाला फंडा

लखनऊ (एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि स्नानार्थियों की संख्या 60 करोड़ तक पहुंचती है तो अनुमान है कि यूपी की जीडीपी में 3.15 से 3.50 लाख करोड रुपये की अतिरिक्त बढ़ोतरी होगी। महाकुंभ का विरोध करने वालों से हमारी इकॉनमिक्स बेहतर है। अगर केंद्र-राज्य की तरफ से मिलकर 7500 करोड़ रुपये खर्च करके अर्थव्यवस्था में तीन से साढ़े तीन लाख करोड़ की अतिरिक्त वृद्धि हो सकती है तो कौन सा सौदा सही है। अपनी संस्कृति और परंपराओं को सम्मान देकर किस तरह देश की एकता और आर्थिकी को प्रोत्साहित किया जा सकता है, यह महाकुंभ के अवसर पर सहज ही अनुभव किया जा सकता है। योगी सोमवार को अपने सरकारी आवास पर महाराष्ट्र से आए युवा उद्यमियों से संवाद कर रहे थे। युवा भारत संस्था के तत्वावधान में मुंबई के औद्योगिक घरानों से जुड़े उद्यमी संवाद में शामिल हुए। सीएम ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में अयोध्या, काशी और प्रयागराज में जिस तरह श्रद्धालु आ रहे हैं, उसने भारतीय संस्कृति को नई पहचान तो दी ही है, अर्थव्यवस्था को भी बड़ा बूस्ट दिया है। इसने भारत के पोटेंशल को दर्शाया है। उन्होंने कहा, अयोध्या में सड़क चौड़ीकरण, इंटरनेशनल एयरपोर्ट निर्माण, काशी विश्वनाथ धाम के दौरान कुछ लोग विरोध कर रहे थे, लेकिन जब सरकार ने दृढ़ इच्छाशक्ति से निर्णय लिया तो रिजल्ट सामने है। एक वर्ष में रामजन्मभूमि मंदिर में 700 करोड़ का चढ़ावा आया। इन लोगों को अब यह भी बुरा लगेगा।

एमपी और राजस्थान में एक्सीडेंट, 10 की मौत

● डंपर ने लोडिंग वाहन को टक्कर मारी, 5 की गई जान ● महाकुंभ से लौट रही कार ट्रेलर में जा घुसी, 5 की मौत

भिंड (एजेंसी)। भिंड के जवाहरपुरा गांव के पास तेज रफ्तार डंपर ने सड़क किनारे खड़े लोडिंग वाहन को टक्कर मार दी। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई। 20 घायल हैं। लोडिंग वाहन को टक्कर मारने के बाद डंपर ने बाइक को भी चपेट में ले लिया। एक्सीडेंट नेशनल हाईवे क्रमांक 719 पर मंगलवार सुबह करीब 5 बजे हुआ। हादसे के शिकार सभी लोग जवाहरपुरा गांव में शादी से अपने गांव भवानीपुरा लौट रहे थे। सभी आपस में रिश्तेदार हैं। डंपर ड्राइवर मौके से भाग निकला। हादसे के बाद ग्रामीणों ने जाम लगा दिया। हाईवे को सिक्सलेन बनाने की मांग करते हुए कलेक्टर, एसपी और सांसद समेत अन्य जनप्रतिनिधियों के खिलाफ नारेबाजी की। मौके पर मौजूद पुलिस अधिकारियों ने उन्हें समझाने की कोशिश की लेकिन वे नहीं माने। जानकारी लगते ही कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव, एसपी असित यादव, एसडीएम अखिलेश शर्मा, डीएसपी दीपक तोमर वहां पहुंचे।

गाड़ी में फंसे शव, गैस लीक की आशंका से ट्रैफिक रोका– दौसा में हुए भीषण सड़क हादसे में पति–पत्नी समेत 5 लोगों की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार महाकुंभ से लौट रहे यात्रियों की कार सड़क किनारे खड़े ट्रेलर में पीछे से टकरा गई। हादसा मंगलवार सुबह करीब 11 बजे दौसा शहर के बाइपास पर हुआ। कार में 6 लोग सवार थे। गाड़ी में फंसे 5 शवों को निकालने में करीब एक घंटे का समय लगा। तीन घायलों को जिला हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया। गाड़ी के कुछ हिस्से तोड़कर घायलों को निकाला गया। कार सवार 5 लोग टोंक के देवली के रहने वाले थे। दौसा डीएसपी रवि प्रकाश शर्मा ने बताया– एक्सीडेंट में मुकुट बिहारी पुत्र किस्तूर चंद (टोंक), गुड्डी देवी पत्नी मुकुट बिहारी (टोंक), निधि पत्नी राकेश सोनी (टोंक), राकेश पुत्र किशनलाल (टोंक) और नफीस (सवाई माधोपुर) की मौत हो गई है। वहीं, कार सवार दीपेश परवानी (जयपुर), ट्रक ड्राइवर धर्मवीर और मैकेनिक रामचरण घायल हुए हैं। पुलिस के अनुसार ईको कार में गैस किट लगी हुई है। इस कारण आसपास से निकल रहे ट्रैफिक को भी कुछ देर के लिए रोका गया था।

म्यांमार के गृहयुद्ध ने बढ़ाई भारत की चिंता

● चीन का डबल गेम, अमेरिकी प्लान और बांग्लादेश कर रहे ‘खेला’

नेपीडा (एजेंसी)। म्यांमार बीते चार साल से गृहयुद्ध से जूझ रहा है। म्यांमार में जुंटा कहने वाले सैन्य शासक और विद्रोही गुट आमने-सामने हैं। म्यांमार में चुनावों में धांधली का आरोप लगाकर सेना ने आंग सान सू की सरकार का तख्तापलट किया था। जनरल मिन आंग ह्लाइंग के नेतृत्व में हुए इस तख्तापलट के बाद बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन और सशस्त्र प्रतिरोध शुरू हो गया, जो एक भीषण गृहयुद्ध में बदल गया। जुंटा को हालिया दिनों में पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज, अराकान आर्मी, कचिन इंडिपेंडेंस आर्मी और करेन नेशनल यूनियन के विद्रोही लड़ाकों के खिलाफ लड़ाई में म्यांमार पर अपनी पकड़ खोनी पड़ी है। इस सब में भारत समेत पड़ोसी देशों की नजर म्यांमार पर है। भारत के सामने खासतौर से चुनौती है क्योंकि चीन म्यांमार में दोहरा खेल खेल रहा है तो अमेरिका भी नियंत्रण बढ़ाना चाहता है। एक अन्य पड़ोसी बांग्लादेश भी म्यांमार में भूमिका रखता है। इस सबमें भारत को अपने हितों को बचाना है। भारत म्यांमार और बांग्लादेश की स्थिति को लेकर चिंतित है लेकिन भारत सीधे सैन्य हस्तक्षेप से बचना चाहता है।

भारत को म्यामार के लिए ढूंढ़ना होगा नया विकल्प

एक्सपर्ट का मानना है कि भारत को म्यांमार के विद्रोही गुटों से संपर्क में रहना चाहिए। इसके लिए भारत को खुफिया अभियानों का इस्तेमाल भी करना चाहिए। भारत को म्यांमार और बांग्लादेश की स्थिति से सावधानीपूर्वक निपटना होगा। सैन्य कार्रवाई से भारत के हितों को नुकसान पहुंच सकता है। भारत को कूटनीति और बातचीत के जरिए समाधान ढूंढ़ना चाहिए। भारत को क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

डॉक्टर बनने के लिए क्यों देश छोड़ रहे भारतीय छात्र?

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत छोड़ने वाले मेडिकल छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है, हर साल 30, 000 से अधिक छात्र विदेश जाते हैं। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के आंकड़ों के अनुसार, केवल 16 प्रतिशत विदेशी मेडिकल स्नातक फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जामिनेशन स्क्रीनिंग परीक्षा पास करते हैं। नीट प्रतियोगिता, उच्च ट्यूशन और घरेलू सीटों की कमी के कारण, भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली त्रस्त है, जिसके कारण विदेशी शिक्षा पर निर्भरता बढ़ रही है।

घरेलू मेडिकल संस्थानों में उपलब्ध कुछ सीटों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा और इस तथ्य के कारण कि कुछ देश बहुत कम ट्यूशन फीस देते हैं, भारतीय छात्र अक्सर विदेश में चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करना चुनते हैं। इससे उन्हें अधिक किफायती लागत पर उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिलती है। अन्य आकर्षक कारकों में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा पद्धतियों से परिचित होना, निजी कॉलेजों में उच्च ट्यूशन फीस, अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा पद्धतियों से परिचित होना और कुछ देशों में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा शामिल हैं। इसलिए, इन छात्रों का मुख्य उद्देश्य चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करना और भारत वापस आना है। (भले ही कुछ लोग विदेश में बसना चाहते हों, लेकिन यह प्रवृत्ति भारत में चिकित्सा प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों से बहुत अलग नहीं हो सकती है)। इसलिए, विदेशी चिकित्सा-स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने की उनकी क्षमता मुख्य चिंता है। क्या सरकार इसे समाप्त कर देगी और इसकी जगह सभी छात्रों के लिए एक परीक्षा लाएगी, चाहे डिग्री भारत से हो या विदेश से? मुख्य मुद्दा यह है कि क्या भारत में पर्याप्त योग्य चिकित्सा पेशेवर हैं या क्या इसका उद्देश्य लोगों को विदेशों में चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने से रोकना है।

भारत छोड़ने वाले मेडिकल छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है, हर साल 30, 000 से अधिक छात्र विदेश जाते हैं। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के आंकड़ों के अनुसार, केवल 16 प्रतिशत विदेशी मेडिकल स्नातक फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जामिनेशन स्क्रीनिंग परीक्षा पास करते हैं। नीट प्रतियोगिता, उच्च ट्यूशन और घरेलू सीटों की कमी के कारण, भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली त्रस्त है, जिसके कारण विदेशी शिक्षा पर निर्भरता बढ़ रही है। कम ट्यूशन लागत, सुव्यवस्थित प्रवेश प्रक्रिया और मान्यता प्राप्त डिग्री के साथ, कई देश यात्रा के लिए पसंदीदा गंतव्य हैं। इन कारकों के कारण, छात्रों की बढ़ती संख्या भारत के बाहर चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करके अंतर को पाट रही है, जिससे यह गारंटी मिलती है कि वे अभी भी डॉक्टर बनने की अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। आसान आवेदन और प्रवेश प्रक्रिया के कारण भारतीय छात्र अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल कोर्स को प्राथमिकता देते हैं। छात्र अंग्रेजी या कोई विदेशी भाषा पढ़ सकते हैं। हर साल ट्यूशन पर लगभग 200, 000 से 300, 000 रुपये खर्च होते हैं। कोई कैपिटेशन शुल्क की आवश्यकता नहीं है। कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों को विश्व स्वास्थ्य संगठन और भारतीय चिकित्सा परिषद से मान्यता मिली है। छात्रों को एक बहुसांस्कृतिक सेटिंग से अवगत कराया जाता है जो उनके जीवन के अनुभवों और ज्ञान को व्यापक बनाता है। अच्छी शैक्षिक गुणवत्ता के साथ इनकी डिग्री अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार मान्यता प्राप्त है। घरेलू सीटों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय मेडिकल छात्र तेजी से देश छोड़ रहे हैं। भारत में छात्र भयंकर प्रतिस्पर्धा के कारण विदेशों में विकल्प

तलाशते हैं, अक्सर उन देशों में जहाँ चिकित्सा नियम ढीले होते हैं। चूँकि भारत में हर 22 आवेदकों के लिए केवल एक मेडिकल सीट है, इसलिए 20, 000 से अधिक छात्र हर साल चीन, रूस और यूक्रेन जैसे देशों में विदेश में अध्ययन करने के लिए मजबूर हैं। लेकिन कई अंतरराष्ट्रीय मेडिकल स्कूलों में पाठ्यक्रम की असमान गुणवत्ता से छात्रों की रोजगार क्षमता और योग्यता प्रभावित होती है। भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली तक विदेशी स्नातकों की पहुँच में देरी होती है क्योंकि उन्हें फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जामिनेशन पास करना होता है और इंटर्नशिप पूरी करनी होती है। बीते साल फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जामिनेशन लेने वाले 32, 000 भारतीय छात्रों में से केवल 4, 000 ही योग्य थे। इन छात्रों और परिवारों के लिए, उच्च ट्यूशन लागत, अस्थिर अर्थव्यवस्थाएँ और कुछ देशों में सुरक्षा सम्बंधी खतरे बोझ हैं। रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष के कारण 24, 000 से अधिक भारतीय मेडिकल छात्रों को विस्थापित होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय नुकसान और अनिश्चित शैक्षणिक भविष्य हुआ। भारत में डॉक्टरों की कमी बदतर होती जा रही है क्योंकि अधिक विदेशी प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवर वहाँ बेहतर अवसरों के कारण विदेशों में अभ्यास करना पसंद करते हैं। चिकित्सा शिक्षा की घरेलू मांग को पूरा करने के लिए पहला परिवर्तन चिकित्सा सीटों की संख्या का विस्तार करना है। 2025 में 10, 000 और मेडिकल सीटें जोड़ी जाएंगी, भारत में 75, 000 अतिरिक्त सीटों का पांच साल का लक्ष्य है। वंचित क्षेत्रों में शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने के लिए किफायती मेडिकल कॉलेज स्थापित करने होंगे। नए सरकारी मेडिकल कॉलेज खोलने और टियर-2 और टियर-3 शहरों में एम्स के विस्तार से चिकित्सा शिक्षा तक पहुँच बढ़ी है।

उच्च गुणवत्ता वाले निर्देश और उचित लागत को बनाए रखते हुए निजी निवेश को प्रोत्साहित करना होगा। कैरिबियन और मणिपाल कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज (नेपाल) जैसे संस्थान प्रदर्शित करते हैं कि भारतीय संस्थान पब्लिक, प्राइवेट, पार्टनरशिप मॉडल के तहत घरेलू स्तर पर विकसित हो सकते हैं। अधिक खुली प्रवेश प्रक्रियाओं और कई प्रवेश मार्गों को लागू करके नीट पर निर्भरता कम करना जरूरी है। चयन मानदंडों को व्यापक बनाने के प्रयास में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग द्वारा ब्रिज कोर्स और वैकल्पिक प्रवेश प्रणाली का सुझाव दिया गया है। भारतीय छात्रों की सेवा के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय परिसरों को बढ़ावा देना होगा। आईआईटी और मणिपाल समूह के अंतरराष्ट्रीय विस्तार से एक ऐसा मॉडल सुझाया गया है, जिसमें भारतीय मेडिकल स्कूल भारतीय नियमों के तहत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करते हैं।

चिकित्सा शिक्षा और इंटर्नशिप को मजबूत करने के लिए, हमें ऐसे सुधारों को लागू करना चाहिए जो उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा के प्रावधान की गारंटी देते हैं। भारतीय चिकित्सा शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप लाना और ग्रामीण क्षेत्रों में अनिवार्य इंटर्नशिप की आवश्यकता है। रोगी देखभाल और व्यावहारिक कौशल पर जोर देने के लिए, 2019 में योग्यता-आधारित चिकित्सा शिक्षा (सीबीएमई) पाठ्यक्रम लागू किया गया था। अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, नैदानिक अनुभव और चिकित्सा संकाय प्रशिक्षण में पैसा लगाना जरूरी है। एम्स और एनएमसी सुधारों द्वारा मेडिकल कॉलेजों के लिए आधुनिक सिमुलेशन लैब और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म की आवश्यकता है। एकरूपता की गारंटी के लिए सरकारी और निजी मेडिकल स्कूलों का नियमित मूल्यांकन जरूरी है।

एनएमसी द्वारा प्रशासित नेशनल एग्जिट टेस्ट (एनईएक्सटी), भारत और विदेशों दोनों से मेडिकल स्नातकों के लिए लाइसेंसिंग परीक्षाओं को मानकीकृत करने का प्रयास करता है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में बेहतर कामकाजी परिस्थितियाँ, प्रोत्साहन और अधिक वेतन प्रदान करना आवश्यक है। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) वंचित क्षेत्रों में एम्स जैसे संस्थान स्थापित करना चाहती है। प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना अति आवश्यक है। ई-संजीवनी टेलीमेडिसिन पहल की बदौलत दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा वितरण में सुधार हुआ है, जिसने 14 करोड़ से अधिक परामर्शों को सक्षम किया है। मेडिकल सीटें बढ़ाने, निजी कॉलेज ट्यूशन को नियंत्रित करने और एफएमजी एकीकरण को मजबूत करने की तीन-आयामी रणनीति आवश्यक है। संकाय मानकों और मेडिकल सीट वितरण के सम्बंध में एनएमसी के 2023 के सुधार सकारात्मक कदम हैं। इसके अलावा, ग्रामीण सेवा को प्रोत्साहित करना और सार्वजनिक-निजी भागीदारी बनाना भारत की स्वतंत्रता की गारंटी देते हुए गुणवत्ता और पहुँच में सुधार कर सकता है। भारत से चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने के लिए इस प्रवास के बारे में मेरी कोई बुरी नहीं है। भारत में, चिकित्सा शिक्षा बेहद महंगी है। प्रवेश की बाधाएँ तर्कहीन हैं। मुझे ऐसा लगता है कि बहुत से और छात्र डॉक्टर बनने में सक्षम हैं। भारत में और अधिक डॉक्टरों की सख्त जरूरत है, खासकर उन लोगों की जो देश के ग्रामीण इलाकों में काम करने के इच्छुक हैं। स्वास्थ्य सेवा में इन देशों की उपलब्धियों को देखते हुए, मध्य एशिया में चिकित्सा शिक्षा खराब नहीं है।

यदि वे भारतीय छात्रों के नामांकन का उपयोग क्षमता उपयोग बढ़ाने और अतिरिक्त आय उत्पन्न करने के लिए करते हैं, तो वहाँ के कॉलेज अधिक प्रभावी और स्थायी रूप से कार्य करेंगे। अगर इससे भारतीय छात्रों के एक समूह को डॉक्टर बनने में मदद मिलती है तो यह दोनों पक्षों के लिए जीत वाली स्थिति है। असफलता की भी संभावना है। कुछ लोग भारत में काम करने की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। कुछ उप-एजेंट या निजी ठेकेदार अधिक छात्रों को आकर्षित करने के प्रयास में कुछ प्रासंगिक जानकारी को रोक सकते हैं। तब आपातकालीन स्थितियाँ हो सकती हैं, जैसे कि चीन में कोविड-19 महामारी या यूक्रेन में युद्ध। इनके परिणामस्वरूप छात्रों के एक समूह को महत्त्वपूर्ण नुकसान उठाना पड़ सकता है। भारत सरकार की नीति आपातकालीन स्थितियों में भी छात्रों की मदद करने में बहुत अच्छी नहीं है। विदेशों में चिकित्सा शिक्षा के सम्बंध में भारत सरकार की एकमात्र कार्यवाही भारत में अभ्यास के लिए योग्यता परीक्षा को और अधिक कठोर बनाना है। यह सवाल विवादास्पद है कि ऐसी परीक्षा कितनी कठिन होनी चाहिए। मुख्य मुद्दा यह है कि क्या भारत में पर्याप्त योग्य चिकित्सा पेशेवर हैं या क्या इसका उद्देश्य लोगों को विदेशों में चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने से रोकना है।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

सराहनीय फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने कार्यस्थल पर वरिष्ठों के बर्ताव को लेकर बड़ा फैसला दिया है। कहा कि वरिष्ठ अधिकारियों की ड़ांट-फटकार को इरादतन किया गया अपमान नहीं माना जा सकता, जिस पर आपराधिक कार्यवाही की जरूरत हो। ऐसे मामलों में व्यक्तियों के विरोद्ध आपराधिक आरोप लगाने की अनुमति देने से गंभीर परिणाम हो सकते हैं। पीठ ने कहा महज गाली-गलौच, असभ्यता व अशिष्टता भारतीय दंड़ संहिता की धारा 504 के तहत आदतन किया गया अपमान नहीं है। यह धारा शांति भंग करने के इरादे से जान-बूझकर अपमान करने से संबंधित है, जिसमें दो साल की सजा का प्रावधान है। मामले में राष्ट्रीय दिव्यांग सशक्तिकरण संस्थान के कार्यवाहक निदेशक पर सहायक प्रोफसर को अपमानित करने का आरोप था। शिकायतकर्ता के अनुसार निदेशक ने अन्य कर्मचारियों के समक्ष ड़ांटा व फटकारा था। यह सच है कि कार्यस्थल से संबंधित अनुशासन और कर्तव्यों के निर्वहन से जुड़ी फटकार, जो व्यक्ति कार्यस्थल पर प्रबंधन करता है, वह अधीनस्थों से अपनी जिम्मेदारी पूरी निष्ठा व समर्पण से पूरी करने की उम्मीद करेगा। हालांकि स्पष्ट तौर पर देखने में आता है कि अनुशासन के नाम पर वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अपने अधीनस्थों के साथ संतुलित बर्ताव का अभाव नजर आता है। लहजा गलत हो भी तो नीयत बुरी नहीं होनी चाहिए, परंतु इस बारीक अंतर को समझना या समझा पाना भी आसान नहीं है। सेना के सख्त अनुशासन के दरम्यान कई बार ऐसी खबरें आती रहती हैं, जहां नीचे के ओहदे के सैनिक द्वारा अपने अधिकारी की हत्या तक कर दी गई। तय रूप से काम का दबाव, उच्च दर्जे की तामील, पाबंदियां और तय वक्त पर जिम्मेदारियों का निर्वहन अधिकारियों के जेहन पर खासा दबाव बनाते हैं। वे भी तनावग्रस्त या काम के बोझ के चलते सामान्य बर्ताव करने से चूक सकते हैं। यहां बात सिर्फ उच्चाधिकारियों या कनिष्ठों तक ही सीमित नहीं है। कार्य-स्थल पर अभद्र भाषा या गाली-गलौच करने वाले अशिष्ट अधिकारियों के बर्ताव को लेकर भी कर्मचारी क्षुब्ध रहते हैं। ज्यों कार्यस्थल पर महिलाओं के खिलाफ होने वाले उत्पीड़न व अभद्र बर्ताव को लेकर कानून बनाए गए हैं। वैसे ही समस्त कर्मचारियों के हित में भी व्यवहारगत संहिता लागू किए जाने की जरूरत है। मानवता कहती है, ओहदे ऊपर-नीचे होने से दोयम बर्ताव करने का हक किसी को नहीं दिया जा सकता। यह नियम मालिकान व मुलाजिम पर भी लागू होता है।

चिंतन-मनन

ईश्वर हमेशा भक्तों की सहायता करता है

ईश्वर को हम भले ही न देख पाएं लेकिन ईश्वर हर क्षण हमें देख रहा होता है। उसकी दृष्टि हमेशा अपने भक्तों एवं सद्व्यक्तियों पर रहती है। अगर आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि जीवन में कभी न कभी कठिन समय में ईश्वर स्वयं आकर आपकी सहायता कर चुके हैं। उस कठिन समय में आपके अंदर भक्ति की भावना उमड़ रही होगी और आप ईश्वर को याद कर रहे होंगे। शास्त्रों कहता है कि ईश्वर के लिए संसार का हर जीव उसकी संतान के समान है। जो व्यक्ति उसके बनाये नियमों का पालन करते हुए जीवन यापन करता है ईश्वर उसकी सहायता अवश्य करते हैं। गजराज की कहानी आपने जरूर सुनी या पढ़ी होगी। नदी में गजराज को मगरमच्छ ने पकड़ लिया। इस कठिन समय में गजराज ने भगवान को पुकारा और भगवान विष्णु प्रकट हो गये। भगवान ने अपने चक्र से मगरमच्छ का सिर काट दिया और गजराज के प्राण की रक्षा की। सूरदास जी के जीवन की भी एक ऐसी ही कथा है। सूरदास जी देख नहीं सकते थे। एक बार गलती से एक गड्ढे में गिर गये। गड्ढे से निकलने का काफी प्रयास करने पर भी वह बाहर निकलने में असफल रहे। इस स्थिति में सूरदास जी ने गोपाल को पुकारा। भगवान श्री कृष्ण बालक रूप में पहुंच गये और सूरदास जी को गड्ढे से बाहर निकाला। मीरा के प्राण की रक्षा के लिए भगवान ने मीरा को मारने के लिए भेजे गये विष को प्रभावहीन कर दिया। बघेलखण्ड के बान्धवगढ़ में रहने वाले सेन नामक नाई की भी भगवान ने सहायता की और बघेलखंड का राजा सेन नाई का भक्त बन गया। यह घटना पांच छ सौ साल पुरानी है। सेन नाई राजा की सेवा करता था। इसका काम प्रतिदिन राजा की हजामत बनाना और तेल मालिश करके स्नान कराना था।...

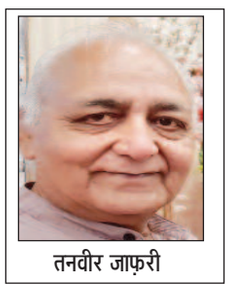

तनवीर जाफ़री

केजरीवाल की हठधर्मिता ने डुबोई आप की नैय्या

दिल्ली की 70 सदस्यों की विधान सभा हेतु हुए 2015 के चुनाव में 70 में से 67 सीटें तथा 2019 में दिल्ली की सातवीं विधानसभा चुनाव में 62 सीटें जीतकर ऐतिहासिक बहुमत प्राप्त करने वाली आम आदमी पार्टी पिछले दिनों दिल्ली चुनाव की जंग हार गयी। भारतीय जनता पार्टी को जहां पूर्ण बहुमत के साथ जहां 48 सीटें हासिल हुई वहीं आप को केवल 22 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। आप के लिये सबसे बड़ा झटका यह भी रहा कि सत्ता गंवाने के साथ ही उसके राष्ट्रीय संयोजक अरविन्द केजरीवाल सहित पार्टी के और भी कई दिग्गज नेता चुनाव हार गये। कुछ राजनैतिक विश्लेषकों का मानना है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की पराजय से पार्टी के अंत की शुरूआत हो चुकी है। यदि ऐसा है तो वास्तव में इसका जिम्मेदार कौन है ? क्या वजह थी कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में 43.57 प्रतिशत मत प्राप्त होने के बावजूद आप को केवल 22 विधानसभा सीटों पर ही जीत हासिल हुई जबकि भाजपा ने मात्र दो प्रतिशत अधिक यानी 45.56 प्रतिशत मत प्राप्त कर 48 सीटों पर जीत दर्ज की। नतीजों से साफ है कि भाजपा ने त्रिकोणीय संघर्ष का लाभ उठाकर ही आम आदमी पार्टी से 26 सीटें अधिक हासिल कीं और दिल्ली की सत्ता आप के हाथों से झटक ली। हालांकि हार के बावजूद आम आदमी पार्टी के इस तर्क को भी नकारा नहीं जा सकता कि बावजूद इसके कि बीजेपी के साथ प्रोपेगंडा,सरकार की सारी मशीनरी ,मीडिया,धनबल व बाहुबल सब कुछ थे,फिर भी उसे आप से मात्र दो प्रतिशत ही ज्यादा वोट मिले हैं।

सवाल यह है कि 2011 में यू पी ए सरकार के विरुद्ध भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के बाद 26 नवंबर 2012 को देश के अनेक बुद्धिजीवियों द्वारा अरविन्द केजरीवाल के राष्ट्रीय संयोजकत्व में स्थापित की गयी आम आदमी पार्टी जोकि न केवल दिल्ली में सत्ता में थी बल्कि वर्तमान समय में देश के समृद्ध राज्य पंजाब में भी सत्तारूढ़ है वही नया नवेला राजनैतिक दल आखिर किन वजहों से और किन परिस्थितियों में इस अंजाम तक जा पहुंचा कि आज आप के अंत पर चर्चा छिड़ गयी है ? सच पूछिये तो दिल्ली में भाजपा की संभावित फतेह की सुगबुगाहट तो दरअसल उसी समय शुरू हो गयी थी जबकि आप ने विगत अक्टूबर 2024 को हरियाणा में हुये विधानसभा चुनाव में इण्डिया गठबंधन घटक का सदस्य होने के बावजूद राज्य की 89 सीटों पर चुनाव लड़ा और कांग्रेस को हरियाणा की सत्ता में वापसी से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गौरतलब है कि कांग्रेस हरियाणा में 90 में 7 सीटें आप के लिये छोड़ने को तैयार थी परन्तु केजरीवाल की जिद थी कि कांग्रेस उसे 10 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़ा करने दे। इस बात पर दोनों दलों में समझौता नहीं हो सका। और आप ने 89 सीटों पर उम्मीदवार उतार दिये। नतीजतन अअढ को राज्य भर में केवल 1.53% वोट प्राप्त हुए। जिन्होंने कांग्रेस को हराने व भाजपा को जिताने में अहम भूमिका निभाई। 2024 में आप द्वारा 10 सीटें तब मांगीं जा रही थीं जबकि 2019 में आम आदमी पार्टी का वोट शेयर ठडळअ से भी काफी कम था। इसी हरियाणा चुनाव परिणाम के बाद ही दिल्ली में भी इसी तरह के चुनाव परिणाम की उम्मीद की जाने लगी थी। जाहिर है ऐसे विध्वंसक फैसले लेने के लिये स्वयं अरविन्द केजरीवाल ही जिम्मेदार थे। वैसे भी 2012 में आप अपने गठन के साथ ही उस समय विवादों में आ गयी थी जबकि अन्ना हजारे ने केजरीवाल द्वारा आम आदमी पार्टी के रूप में नया राजनैतिक दल बनाने की कोशिश का विरोध किया था। हालांकि अन्ना हजारे व केजरीवाल दोनों ही नेताओं को लेकर एक बड़े राजनैतिक विश्लेषक वर्ग का यह भी मानना है कि अन्ना आंदोलन हो या केजरीवाल की तर्ज -ए -सियासत,दरअसल यह सब कांगेस के विरोध में तथा भाजपा को फायदा पहुँचाने के लिये रचा गया एक बड़ा राजनैतिक चक्रव्यूह है,अन्यथा क्या कारण है कि जिस जनलोकपाल को लेकर आंदोलन व राजनैतिक दल खड़ा किया गया था उसका जिक्र इन्हीं नेताओं के मुंह से अब क्यों सुनाई नहीं देता। पिछले दस सालों में बड़े से बड़े घोटाले उजागर हुये, उनके विरोध अन्ना हजारे ने आंदोलन क्यों नहीं किया ?

इसके अलावा आप के गठन के फौरन बाद ही जिसतरह पार्टी के संस्थापक लोगों व अनेक बुद्धिजीवियों द्वारा पार्टी छोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ उसका भी मुख्य कारण केजरीवाल का जिद्दीपन व उनकी हठधर्मिता ही थी। क्या वजह थी कि आम आदमी पार्टी को सबसे पहले चंदा देने वाले पूर्व कानून मंत्री सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील शांति भूषण जिन्होंने पार्टी की स्थापना पर 1 करोड़ रुपए का चंदा दिया था, 2014 से ही उनका आप से मोहभंग हो गया ? शांति भूषण ने उसी समय केजरीवाल को अनुभवहीन, दिल्ली विधानसभा चुनावों में टिकट बंटवारे में गड़बड़ी करने व पार्टी में मनमानी चलाने जैसे अनेक आरोप लगाए थे। इसी तरह केजरीवाल के एक और खास साथी एक्टिविस्ट आशीष खेतान, एक प्रसिद्ध टीवी न्यूज चैनल के मैनेजिंग एडिटर के पद से इस्तीफा देकर आम आदमी पार्टी में शामिल होने वाले आशुतोष,पार्टी का थिंक टैंक व पार्टी की कानूनी लड़ाई लड़ने वाले वाले प्रशांत भूषण जैसे साथियों को केजरीवाल संभाल नहीं सके। इसी तरह राजनीतिक विचारक योगेंद्र यादव को जोकि आम आदमी पार्टी के लिए चुनावी रणनीति बनाने में अहम भूमिका निभाते थे उन्हें भी प्रशांत भूषण के साथ ही पार्टी विरोधी गतिविधि ?ं के आरोप में पार्टी से निकाल दिया गया। समाजशास्त्री आनंद कुमार, पैथोलॉजिस्ट अंजली दमानिया, सामाजिक कार्यकर्ता मयंक गांधी,किरन बेदी ,शाजिया इल्मी, विनोद कुमार बिन्नी,कपिल मिश्रा,एमएस धीर सहित और भी कई नेता या तो पार्टी छोड़ गये या फिर निष्क्रिय हो गये। ऐसे सभी नेता केजरीवाल के साथ काम कर पाने में स्वयं को असहज महसूस कर रहे थे। परिणामस्वरूप अनेक साथी नेताओं के मना करने के बावजूद केजरीवाल अपनी जिद में ही दिल्ली में विवादित शराब नीति लाये जोकि उनकी राजनैतिक तबाही व बदनामी का कारक साबित हुई।

दुष्कर्म: विवाह के झूठे वादों से बढ़ते मामले

प्रियंका सौरभ

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की नई रिपोर्ट में कहा गया है कि हर साल झूठी शादी की शपथ की आड़ में कई हजार बलात्कार के मामले दर्ज किए जाते हैं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा अतुल गौतम मामले में 2025 में दिए गए फैसले से यह सवाल उठता है कि न्यायिक व्याख्याएं महिलाओं की स्वायत्तता और कानूनी सुरक्षा को कैसे प्रभावित करती हैं? बलात्कार और सेक्स के लिए सहमति देना स्पष्ट रूप से अलग-अलग है। इन स्थितियों में, न्यायालय को सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि क्या शिकायतकर्ता की पीड़िता से शादी करने की वास्तविक इच्छा थी या उसके कोई छिपे हुए उद्देश्य थे और उसने केवल अपनी वासना को शांत करने के लिए इस आशय का झूठा वादा किया था, क्योंकि बाद वाले को धोखा या छल माना जाता है। इसके अतिरिक्त, झूठा वादा न निभाने और उसे तोड़ देने में अंतर है।

अभियुक्त द्वारा अभियोक्ता को यौन गतिविधि में शामिल होने के लिए लुभाने के इरादे के बिना किया गया वादा बलात्कार के रूप में मान्य नहीं होगा। अभियोक्ता अभियुक्त द्वारा बनाए गए झूठे प्रभाव के बजाय उसके प्रति अपने प्यार और जुनून के आधार पर अभियुक्त के साथ यौन संबंधों के लिए सहमति दे सकती है। वैकल्पिक रूप से, अप्रत्याशित या अनियंत्रित परिस्थितियों के कारण ऐसा करने का इरादा होने के बावजूद अभियुक्त उससे शादी करने में असमर्थ हो सकता है। इन स्थितियों को अलग तरीके से संभालने की जरूरत है। बलात्कार का मामला तभी स्पष्ट होता है जब शिकायतकर्ता का कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा या गुप्त उद्देश्य हो। अतुल गौतम बनाम इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करता है। यह फैसला अपर्णा भट बनाम के विपरीत है। 2021 के मध्य प्रदेश राज्य के फैसले में आरोपी और पीड़ित को द्वितीयक आघात से बचने के लिए जमानत पर रहते हुए संवाद करने से मना किया गया है। सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि निष्पक्ष सुनवाई की गारंटी के लिए, जमानत की आवश्यकताओं को आरोपी और उत्तरजीवी के बीच संचार के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। यह विचार कि विवाह बलात्कार के लिए एक उपाय है न कि अपराध के लिए सजा, ऐसी जमानत आवश्यकताओं द्वारा पुष्ट होता है, जो सामाजिक समझौते को कानून के शासन से आगे रखता है। रामा शंकर बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2022) में जमानत देते समय इसी तरह के शब्दों का इस्तेमाल किया गया था, जिसने प्रतिवादी के खिलाफ अभियोजन पक्ष के मामले को कमजोर कर दिया। उत्तरजीवी को जमानत प्राप्त करने के लिए आरोपी द्वारा विवाह के लिए मजबूर किया जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप कानूनी व्यवस्था के भीतर निरंतर दुर्व्यवहार हो सकता है। अभिषेक बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2024) ने न्याय की गारंटी देने के बजाय, अभियुक्त को विवाह के वादे के बदले में जमानत देकर एक दबावपूर्ण गतिशीलता बनाई। जो उत्तरजीवी को उचित पुनर्वास सहायता प्राप्त करने के बजाय अभियुक्त पर निर्भर रहने के लिए मजबूर करता है। किशोरों के निजता के अधिकार (2024) में न्यायालय द्वारा उत्तरजीवियों और बच्चों को आवास, शिक्षा और परामर्श प्रदान करने के राज्य के दायित्व पर प्रकाश डाला गया था। जमानत का उद्देश्य सामाजिक कर्तव्यों को लागू करना नहीं है, बल्कि मामला लंबित रहने तक अस्थायी स्वतंत्रता की गारंटी देना है। न्यायालयों ने पिछले कई निर्णयों में एक पीड़ित के पुनर्वास को विवाह के बराबर माना है, बलात्कार को शारीरिक स्वायत्तता के उल्लंघन के रूप में स्वीकार करने में विफल रहे। न्यायालय महिलाओं की स्वायत्तता को कमजोर करते हुए अपराधियों के साथ विवाह करने के लिए पीड़ितों पर दबाव डालकर कानूनी संरक्षण के तहत दुर्व्यवहार और नियंत्रण को बढ़ावा देते हैं। विवाह को उपाय मानने वाली अदालतें पीड़ित की सहमति की कमी को नजरअंदाज करती हैं, जिसका अर्थ है कि जबरदस्ती को कानूनी रूप से उचित ठहराया जा सकता है।

महिलाओं को लगातार आघात और सुरक्षा जोखिमों के बावजूद अक्सर अपने दुर्व्यवहार करने वालों के साथ 'समझौता विवाह' में रहने के लिए मजबूर किया

जाता है। अनुच्छेद 21 का उल्लंघन करते हुए, जो महिलाओं की स्वायत्तता और गरिमा की रक्षा करता है, ऐसे निर्णय महिलाओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध संबंधों में मजबूर करके उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, जबरन विवाह अनुच्छेद 21 का उल्लंघन करते हैं, जिससे पीड़ितों को न्याय के बजाय अधिक शोषण का सामना करना पड़ता है। ये निर्णय इस धारणा को बनाए रखते हैं कि विवाह यौन हिंसा को हल कर सकता है, इन घटनाओं को गंभीर अपराधों के बजाय नागरिक विवादों में बदल देता है। रिश्ते की जटिलता और धोखाधड़ी के इरादे के बीच अंतर करने के लिए एक अच्छी तरह से कानूनी रणनीति की आवश्यकता होती है। कानूनी सुरक्षा को मजबूत करके और लिंग-संवेदनशील न्यायिक प्रशिक्षण प्रदान करके न्याय किया जा सकता हैङ्क जो लैंगिक समानता के लिए भारत की प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

आज का मुद्दा समाचार पत्र का प्रत्येक अंक मां गंगा और सिद्ध पीठ बाबा बालक नाथ मंदिर सेक्टर 62 नोएडा के चरणों में समर्पित : स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक मनोज वत्स द्वारा वत्स ऑफसेट मुद्दा हाउस सी ब्लॉक बरात घर चौड़ा रघुनाथपुर सेक्टर 22 नोएडा गौतम बुध नगर उत्तर प्रदेश से मुद्रित करा कर मुद्दा हाउस सी ब्लॉक बरात घर चौड़ा रघुनाथपुर सेक्टर 22 नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित किया मुख्य संपादक के.जी.शर्मा **RNI.NO.UPHIN/2011/37197,** 9310549614
किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।

महाशिवरात्रि पर श्रद्धालुओं की व्यवस्थाओं की समीक्षा बैठक रामघाट में गंगा घाट पर डीएम ने की

आज का मुद्दा (आशीष कुमार) बुलंदशहर : महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर तहसील डिबाई के अंतर्गत ग्राम रामघाट पर गंगा घाट से लाखों की संख्या में श्रद्धालु जल भरकर ले जाते हैं। 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के मौके पर श्रद्धालुओं के द्वारा जल भरकर ले जाने हेतु विभागों द्वारा की जाने वाली व्यवस्थाओं की समीक्षा बैठक रामघाट में गंगा घाट पर जिलाधिकारी श्रुति की अध्यक्षता में हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने विभागवार की जाने वाली व्यवस्थाओं की तैयारियों के बारे में जानकारी हासिल की। बताया गया कि रामघाट के गंगा घाट पर अलीगढ़, अतरौली, मथुरा सहित अन्य स्थलों से लाखों की संख्या में जल भरने हेतु कांवड़िए आते हैं। घाट पर आने जाने हेतु अलग अलग पुल है जिन पर दोनों तरफ को बेरिकेटिंग कर सुरक्षित कराए जाने के निर्देश दिए। रूट प्लान के बारे में जानकारी लेते हुए निर्देशित किया गया कि वाहनों के लिए चिह्नित पार्किंग में ही वाहनों को खड़ा कराया जाए।

पार्किंग स्थल पर प्रकाश आदि व्यवस्था समय से कर ली जाए। आने जाने वाले मार्गो पर संकेतक भी लगाए जाए। रामघाट को ओर कावंड़ियों से अतिरिक्त कोई अन्य वाहन नहीं आए इसके लिए रूट डायवर्जन कराया जाए। यातायात व्यवस्था को दूरस्थ बनाये रखने के लिए बेरियर लगाकरे रूट डायवर्ट किया जाए। डायवर्ट वाले स्थानों पर पुलिस सहायता केंद्र बनाकर लोगों की समस्या का निराकरण किया जाए। मेले को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए पुलिस बल की ड्यूटी लगाई जाए। गंगा घाट पर श्रद्धालु गहरे जल में नहीं जाने पाए इस हेतु समय से बैरिकेडिंग करा दी जाए। गहरे पानी में नहीं जाने के लिए संकेतक लगाए जाए। गोताखोर, नाव, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, खोया पाया केंद्र आदि व्यवस्था को भी सुनिश्चित कराया जाए। महिला श्रद्धालुओं के लिए घाट चेंजिंग हेतु पर्याप्त संख्या में चेंजिंग रूम चारों ओर एवं ऊपर से कवर कराकर बनाये जाए। गंगा घाट एवं मार्गो पर प्रकाश व्यवस्था भी करायी जाए। विद्युत आपूर्ति बनाए रखने के लिए जेनरेटर भी उपलब्ध रखे। मेले के दौरान साफ सफाई की विशेष व्यवस्था हेतु बीडीओ को निर्देशित किया गया कि सफाई कर्मियों की रोस्टर के अनुसार ड्यूटी लगाकर सफाई व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। पेयजल की व्यवस्था हेतु टैंकर की व्यवस्था, पर्याप्त संख्या में मोबाइल टॉयलेट की भी व्यवस्था कराई जाए। मेले के दौरान स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याओं के निराकरण के लिए सीएमओ को निर्देश दिए गए कि स्वास्थ्य कैंप लगाकर स्वास्थ्य टीम की तैनाती, आवश्यक जीवनरक्षक दवाओं की उपलब्धता के साथ एम्बुलेंस भी उपलब्ध रखे। कांवड़ मार्ग पर सड़को की मरम्मत करने के निर्देश पीडब्ल्यूडी विभाग को दिए। मेले में विद्युत सुरक्षा के दृष्टिकोण से सड़क किनारे, घाट पर विद्युत पोल, ट्रांसफार्मर को कवर कराये जाने, अतिरिक्त टांसफार्मर की व्यवस्था, जर्जर तारो की मरम्मत करने के निर्देश विद्युत विभाग को दिये। महाशिवरात्रि के अवसर पर आने वाले श्रद्धालुओं को गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थ मिले यह सुनिश्चित कराने के लिए खाद्य विभाग को टीम लगाकर भंडारे, खाने की दुकानों की जांच करने के निर्देश दिए गए। रास्ते मे पड़ने वाले ढाबो की भी जांच कर खाने पीने की चीजों के रेट एक समान सुनिश्चित कराये जाए। व्यवस्था बनाए रखने हेतु सहयोग के लिए सिविल डिफेंस के वॉलेंटियर्स भी लगाए जाते हैं।

जिलाधिकारी ने सम्बंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि जो भी व्यवस्था विभागों के द्वारा की जानी है उन्हें समय से सुनिश्चित कराया जाए। संभवतः 22 फरवरी से जल लेने के लिए श्रद्धालुओं का आना शुरू हो जाएगा इसलिए आज ही स्थलीय निरीक्षण कर जो भी अवशेष व्यवस्था है उन्हें तत्काल कराया जाना सुनिश्चित करें। बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन डा0 प्रशांत कुमार, एसपी देहात रोहित मिश्रा, सीएमओ, उप जिलाधिकारी डिबाई, सीओ डिबाई सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बीबी नगर में 60 नए सदस्य जुड़े, जगबीर सिंह बने इकाई सभापति

आज का मुद्दा

बुलंदशहर : भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक ने अपने संगठन को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। बीबी नगर ब्लॉक के निसुरखा गांव में चौधरी जगबीर सिंह के आवास पर आयोजित पंचायत में करीब 60 नए किसानों ने संगठन की सदस्यता ग्रहण की।

पंचायत की अध्यक्षता चौधरी छत्रपाल सिंह ने की, जबकि संचालन बजरंगबली बाबा ने किया। कार्यक्रम में युवा जिला अध्यक्ष ठाकुर शैलेंद्र आर्य, जिला प्रभारी चौधरी गुड्डू प्रधान, आलोक राठी और सावेज खान समेत कई प्रमुख नेता मौजूद रहे। ठाकुर शैलेंद्र आर्य ने संगठन की उपलब्धियों से किसानों को अवगत कराया।

पंचायत में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें चौधरी जगबीर सिंह को इकाई सभापति, सरफराज सिंह को अध्यक्ष, चमन सिंह को उपाध्यक्ष, कुंवारपाल सिंह को सचिव, सतपाल सिंह को उपाध्यक्ष और वीरेंद्र सिंह को संगठन मंत्री नियुक्त किया गया। कार्यक्रम में सुरेंद्र सिंह, सुरेश, छत्रपाल सिंह, रविंद्र सिंह, दिनेश कुमार गुप्ता, सुदेश कुमार, मनीष, रामकुमार, श्रीपाल सिंह, ओमवीर सिंह, सतवीर सिंह, चंद्रपाल सिंह, राजकुमार सिंह, देवेंद्र शर्मा, हरवीर सिंह, नेपाल सिंह, जयप्रकाश शर्मा और नितीन चव्हाण सिंह सहित सैकड़ों किसान शामिल हुए। इस पंचायत का मुख्य उद्देश्य किसानों की समस्याओं को सुनना और संगठन को मजबूत करना था।

स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत छात्रों को दिए गए स्मार्टफोन

आज का मुद्दा (आशीष कुमार)

बुलंदशहर पहासू स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत श्री होती सिंह महेंद्र सिंह आदर्श कन्या पीजी कॉलेज पहासू में 20 छात्राओं को स्मार्टफोन तथा तीन छात्रों को टेबलेट वितरित किए गए होती सिंह महेंद्र सिंह आदर्श कन्या पीजी कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में उर्मिला आर्य कन्या इंटर कॉलेज पहासू के प्रबंधक सुधीर कुमार सिंह तथा होती सिंह महेंद्र सिंह आदर्श कन्या पीजी कॉलेज की प्राचार्य डॉक्टर रुचिता भारद्वाज के द्वारा सभी छात्राओं को स्मार्टफोन दिए गए और छात्राओं से आवाहन किया कि सरकार के द्वारा निशुल्क स्मार्टफोन का सभी उपयोग कर वह अपनी शिक्षा को बेहतर बनाएं जिससे सभी छात्राएं अपने उज्जवल भविष्य को और अधिक विकसित कर सके तथा सभी कॉलेज की छात्राओं से कहा गया कि अपने माता-पिता का अच्छी शिक्षा के साथ नाम रोशन करें जिससे आपकी मेहनत करने से कॉलेज का तो नाम रोशन होगा ही साथ ही आपके माता-पिता और आपके गांव का भी नाम रोशन होगा स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम में सभी कॉलेज का स्टाफ त्रिवेंद्र वंदना गर्ग गुंजन रीता अक्षय प्रताप सहित कॉलेज की छात्राएं चारु चौधरी वर्षा अंजलि यशी नीरू स्वामी और अन्य छात्राएं भी मौजूद रही।

पेड़ से लटककर मजदूर का शव जांच में जूटी पुलिस

आज का मुद्दा बुलंदशहर : अनुपशहर कोतवाली क्षेत्र के गांव लच्छमपुर में अपनी सुसराल में रह रहे मजदूर रामगोपाल उम्र करीब 35 का बाग में पेड़ पर फंदे में लटका हुआ शव मिला । पुलिस व फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंचकर जांच में जुटी । रामपुर के साहिबाबाद थाना क्षेत्र के भुड़ासी गांव निवासी रामगोपाल पुत्र भगवान सिंह पिछले 4 वर्षों से अपनी ससुराल गांव लच्छमपुर में रहकर मजदूरी का काम कर रहा था। मंगलवार दोपहर रामगोपाल का शव बाग में आम के पेड़ पर लटका मिला। पुलिस प्रथम दृष्टि आत्महत्या मान रही है। वही थाना प्रभारी ने बताया कि आत्महत्या के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। कोतवाली प्रभारी अनूपशहर विशंभर दयाल के अनुसार, फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया गया है। टीम ने मौके से साक्ष्य एकत्र किए हैं। शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है। जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे से कंट्रोल रूम के माध्यम से होगी निगरानी : डीएम

आज का मुद्दा (आशीष कुमार)

बुलंदशहर : उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट परीक्षा-2025 को नकलविहीन, सकुशल सम्पन्न कराने के लिए जिलाधिकारी श्रीमती श्रुति की अध्यक्षता में ललता प्रसाद सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज में सभी केन्द्र व्यवस्थापक, स्टैटिक, सेक्टर मजिस्ट्रेट, सचल दल प्रभारी की बैठक आहूत हुई। बैठक में जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि परीक्षा को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षा दिनांक 24 फरवरी, 2025 से प्रारम्भ होकर दिनांक 12 मार्च, 2025 तक सम्पन्न होगी। परीक्षा दो पालियों में आयोजित होगी, प्रथम पाली की परीक्षा प्रातः 08:30 बजे से 11:45 बजे तक तथा द्वितीय पाली की परीक्षा सायं 02:00 बजे से 05:15 बजे तक संचालित होगी। जनपद बुलन्दशहर में 110 परीक्षा केन्द्रो बनाये गये है। जनपद के सभी परीक्षा केंद्रों पर सुरक्षा के दृष्टिकोण से पुलिस बल के तैनाती रहेगी। सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं जिनका जनपद स्तर पर कंट्रोल रूम के माध्यम से निगरानी भी की जाएगी। संकलन केंद्र एवं सचल दल के साथ पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की जा रही है। साथ ही अवगत कराया है कि परीक्षा केन्द्रो से परीक्षा उपरान्त गोपनीय सामग्री संकलन केन्द्रो पर जमा करने के लिए भी पुलिस बल तैनात रहेगा।

बैठक में जिलाधिकारी महोदया ने सभी केंद्र व्यवस्थापकों को निर्देशित किया कि बोर्ड परीक्षा-2025 को नकलविहीन, शुचिता के साथ सकुशल सम्पन्न करान के लिए माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा दिए गए निदेशों के क्रम में व्यवस्था सुनिश्चित कराते हुए परीक्षा कराए। किसी भी प्रकार की लापरवाही अक्षम्य है। परीक्षा दो पालियों में आयोजित हो रही है इसलिए ध्यान रखा जाए कि जिस पाली में परीक्षा है उसका ही प्रश्न पत्र वितरित किया जाए। प्रश्न पत्रों को स्ट्रांग से जिनकी जिम्मेदारी है उनकी उपस्थिति में ही निकाला जाए। यह परीक्षा केवल छात्र/छात्राओं की ही नहीं बल्कि हम सभी की भी है कि परीक्षा को सकुशल सम्पन्न कराया जाए। बोर्ड परीक्षा को एक चुनौती के रुप में लेकर कार्य किया जाए। शासन से प्राप्त निदेशों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें। जिसे जो जिम्मेदारी सौंपी गई है उसका अक्षरशः पालन करें। बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन डा प्रशांत कुमार, एसपी देहात रोहित मिश्रा, एसपी सिटी शंकर प्रसाद सहित सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

स्याना में एकीकृत बागवानी विकास मिशन पर समारोह का हुआ आयोजन

अमन त्यागी (आज का मुद्दा)

"आम उत्पादन की उन्नत तकनीकी और उयकठा रोग प्रबंधन" विषय पर एक बागवान गोष्ठी का आयोजन केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमान खेड़ा, लखनऊ एवं समक बायो एनर्जी फार्मर प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड द्वारा पद्मश्री श्री भारत भूषण त्यागी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम के अध्यक्ष पद्मश्री श्री भारत भूषण त्यागी ने बागवान और ठेकेदारों के आपसी संबंधों पर जोर देते हुए बागों के स्वास्थ्य और उत्पादकता और किसान की आमदनी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने खेती को एक साझा कार्यक्रम बताया और आपस में किसान उत्पादक संघ से जुड़ने का आह्वान किया।श्री भारत भूषण त्यागी ने फसलोत्पादन में अधिक मात्रा में उर्वरकों और फसल सुरक्षा रसायनों के प्रयोग से हो रहे दुष्परिणामों पर विस्तृत चर्चा की और बताया कि इनके बिना या सीमित प्रयोग से भी लाभकारी खेती की जा सकती है। केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान रहमान खेड़ा लखनऊ के निदेशक डॉ टी दामोदरन ने अपने संबोधन में बताया कि वह आम के पेड़ों के सूखने की बढ़ती समस्या पर अत्यधिक चिंतित हैं और इसके समाधान हेतु किसानों को केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि परियोजना से स्याना क्षेत्र की इस समस्या का समाधान अवश्य होगा।

डॉ टी दामोदरन ने बताया कि रसायनों के अधिक प्रयोग के कारण मृदा की उर्वरता बहुत घट गई है, अतः रसायनों के संतुलित प्रयोग के साथ जैविक खाद/जैव नियामकों और संस्तुत रोग एवं कीट नाशियों का प्रयोग ही करना चाहिए। रसायनों के प्रयोग से मृदा में उपस्थित मित्र जीवन की संख्या घटती है, जिसे कार्बनिक खाद और जैव नियंत्रकों के प्रयोग से बढ़ाया जाना चाहिए।

शिवशिष्ट अतिथि और संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ शैलेन्द्र राजन बताया कि आम की प्रचलित प्रजातियों के अलावा उपलब्ध अनेक नई प्रजातियों (सी आईं एस एच अरुणिका, सी आईं एस एच अंबिका, अवध समृद्धि, अवध अभया, पूसा अरुणिमा, पूसा सूर्या, पूसा लालिमा, पूसा मनोहारी, आदि) के नए बाग लगाना अधिक लाभकारी हो सकता है।डॉ राजन ने कहा कि आम का उकठा रोग पूरे देश में समस्या बन गया है, तकनीकी को अपना कर इसे रोकने की आवश्यकता है। डा शैलेन्द्र राजन ने बागवानी की संपूर्ण समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बागों के कीट बीमारी प्रबंध, फलों की तुड़ाई, बैंगिंग, आम के निर्यात पर विशेष जोर दिया। डा राजन ने क्षेत्र में विभिन्न नवीनतम किस्मों को लगाने पर जोर दिया।

संस्थान के फसल उत्पादन प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष डा कुंदन किशोर ने सघन बागवानी, उचित पोषण एवं जल प्रबंधन पर जोर दिया। उचित छत्र प्रबंधन पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने आम के पौधों को शुरू से ही उचित ढांचा बनाने पर जोर दिया। पुराने बागों के जीर्णोद्धार के लिए उन्होंने वलयन (गर्डलिंग) कर 14 से 16 फीट ऊपर से अक्टूबर से दिसंबर में काटकर जीर्णोद्धार करने

त्रिवेणी एक्सप्रेस में जगह पाने को यात्री प्लेटफार्म से कूदे, स्टेशन पर खचाखच भरी भीड़

(के0जी0 शर्मा) लखनऊ। चारबाग रेलवे स्टेशन का यह नजारा बता रहा कि महाकुंभ में पुण्य डुबकी लगाने का श्रद्धालुओं का उत्साह कम होने का नाम नहीं ले रहा। प्रयागराज की ओर से जाने वाली ट्रेनें सोमवार को भी यात्रियों से ठसाठस भरी दिखी, जबकि न तो अवकाश था और न ही कोई विशेष मुहूर्त ...। दोपहर से ही यात्रियों के रेलवे स्टेशन पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया था, जैसे-जैसे गंगा गोमती के जाने का समय नजदीक आया प्लेटफार्म संख्या नंबर दो भर गया। त्रिवेणी एक्सप्रेस चारबाग पहुंचने से पहले ही जीआरपी व आरपीएफ के जवानों के हाथ-पांव फूल गए, क्योंकि बड़ी संख्या में लोग थ्रू लाइन पर खड़े दिखे, जैसे-तैसे उन्हें बैठाया गया, इसी बीच प्लेटफार्म नंबर एक पर ट्रेन पहुंची तो यात्री उससे निकलकर त्रिवेणी एक्सप्रेस में चढ़ गए। ट्रेन आने के समय एक यात्री इंजन के सामने ही कूदकर थ्रू लाइन पर पहुंचा और बाल-बाल बच गया।

सिगरेट देने से मना किया तो दुकानदार को पीटा, कार से रौंदते हुए घसीटा, पुलिस जांच में जुटी

(अंकुरित ओझा) गाजियाबाद। शालीमार गार्डन एक्सटेंशन-2 के सी ब्लॉक में रविवार रात करीब 11 बजे दुकान बंद करने के बाद एक ग्राहक को सिगरेट देने से मना करने पर कार सवार तीन युवकों ने दुकानदार संदीप को पीट दिया। बीच बचाव में आए भाई संजय पर आरोपियों ने ईंट से सिर पर हमला कर घायल कर दिया। संजय जब आरोपियों को पकड़ने के लिए दौड़े तो आरोपियों ने कार चलाकर उन्हें रौंद दिया और घसीटते हुए काफी दूर तक ले गए। ऐसे में संजय गंभीर रूप से घायल हो गए। अब शालीमार गार्डन थाना पुलिस इस मामले की जांच में जुटी है। शालीमार गार्डन में रहने वाले संदीप बत्रा ने बताया कि उनकी एक्सटेंशन-2 के सी ब्लॉक में पान की दुकान है। इसके पीछे उनके भाई संजय की परचून की दुकान है। रविवार रात करीब 11 बजे ईको कार से तीन युवक आए और उनसे तीन सिगरेट ली। तीनों बराबर में खड़े होकर सिगरेट पीने लगे। इसी बीच सामान अंदर कर उन्होंने दुकान बंद कर दी। युवकों ने उनसे दोबारा सिगरेट मांगी तो संदीप ने देने से मना कर दिया। उनका कहना है कि फिर से दुकान खोलने पर काफी समय लगता। दूसरी जगह से सिगरेट लेने की बात कहने पर तीनों आग बबूला हो गए और गाली-गलौज कर मारपीट करने लगे। शोर शराबा सुनकर अपनी दुकान से उनके भाई संजय आ गए। उन्होंने तीनों युवकों से संदीप को छुड़ाया। इसी बीच एक युवक ने ईंट से संजय के सिर में वार कर दिया। जिससे उनके सिर में गंभीर चोट आई और लहूलुहान हो गए। ऐसे में वह पुलिस को फोन कर सूचना देने लगे तो आरोपी कार में बैठकर भागने लगे। संजय ने आरोपियों को रोकने का प्रयास किया तो आरोपी ने एक दम तेजी से कार चला दी। कार से टकराकर संजय गिर गए। आरोपी कार से संजय को रौंदते हुए काफी दूर तक ले गए। इससे संजय गंभीर रूप से घायल हो गए। संदीप ने सब्जी विक्रेता की मदद से आरोपियों का पीछा किया। आगे संजय लहूलुहान हालत में सड़क पर पड़े मिले। इसके बाद उन्होंने परिजनों को बुलाकर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया। उन्होंने बताया संजय के सिर में कई टांके आए हैं। पैर में भी फ्रैक्टर हुआ है। कार से टक्कर मारने और रौंदते हुए घसीटकर ले जाने की पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे कैद हो गई। फुटेज में दिख रहा कि किस तरह हमलावर संजय को कार से घसीटकर ले जा रहे हैं। आसपास के लोगों ने फुटेज सोशल मीडिया पर पोस्ट करके पुलिस से आरोपियों को गिरफ्तारी व सख्त कार्रवाई की मांग की है।

ओवैसी का हैदराबाद तो मुंबई के टक्कर का निकला, पर क्यों है खुश होने वाली बात नहीं

(के0जी0 शर्मा) नई दिल्ली। हैदराबाद में लोगों की भीड़ दिल्ली से भी ज्यादा हो गई है। तेलंगाना के आंकड़ों के मुताबिक, हैदराबाद में एक वर्ग किलोमीटर में 18161 लोग रहते हैं, जबकि दिल्ली में यही संख्या 11,313 है। वहीं अगर दुनिया की बात करें तो सबसे घना बसा शहर फिलीपींस का मनीला है, जहां एक वर्ग किलोमीटर में 43,079 लोग रहते हैं। भारत में मुंबई सबसे घनी आबादी वाला शहर है, जहां एक वर्ग किलोमीटर में 28508 लोग रहते हैं। हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी का संसदीय क्षेत्र तेजी से विकास कर रहा है, जहां एक तरफ नौकरियां और तरक्की के मौके बढ़ रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ शहर के बुनियादी ढांचे, सुविधाओं और घरों पर दबाव भी बढ़ रहा है। हैदराबाद में लोगों की बढ़ती संख्या के साथ संसाधनों की मांग भी बढ़ रही है। हैदराबाद का आईटी उद्योग, उसकी संस्कृति और इतिहास उसे नौकरीपेशा लोगों, छात्रों और व्यापारियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहे हैं।

हापुड़ के छात्र ने नेशनल बैडमिंटन प्रतियोगिता में दूसरा स्थान किया प्राप्त

हापुड़। नगर के एसएसवी इंटर कॉलेज के एक छात्र ने ग्वालियर में आयोजित नेशनल बैडमिंटन प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त कर कॉलेज व शहर का नाम रोशन किया है। कॉलेज प्रबंधन व प्रधानाचार्य ने छात्र को बंधाईयां दी है। कॉलेज प्रधानाचार्य विजय गर्ग ने बताया कि ग्वालियर में आयोजित हुई 12 वीं नेशनल बैडमिंटन प्रतियोगिता में एसएसवी इंटर कॉलेज के नौं वीं कक्षा के स्टूडेंट शिवम ने नेशनल बैडमिंटन प्रतियोगिता के अंडर-17 बालक वर्ग में दूसरा स्थान प्राप्त कर कॉलेज का नाम देश में रोशन किया। छात्र की उपलब्धि पर कॉलेज प्रबंधक सुधीर अग्रवाल चोटी, प्रधानाचार्य विजय कुमार गर्ग व शिक्षकों ने बंधाईयां दी।

उत्तर रेलवे

(ई–नीलामी सूचना)

संख्या–No 3PUB/ATM/DLI-DIV/E-auction/2022 दिनांक : /02/2025

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/यात्री सेवा, उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल, नई दिल्ली द्वारा स्टेशन परिसर पर ऑटोमेटेड टेलर मशीन (एटीएम/ATM)/डीलक्स बैंकिंग यूनिट/DBU's/बैंकिंग इ–लॉबी की स्थापना के अनुबंध लॉटस/साइट्स के आवंटन हेतु ई–नीलामी, IREPS पोर्टल (https://ireps.gov.in/) पर ई–बोली ''जैसा है जहां है'' के आधार पर निम्नलिखित प्रकार से आमंत्रित कि जाती है–

ई–कैटलॉग संख्या E-Catalogue No.	ई–नीलामी की तिथि एवं समय	रेलवे स्टेशन/स्थान/साइट्
DLI-ATM-04-2025	दिनांक 03.03.2025 को 11:00 बजे	बड़ोदा हाउस

वेबसाइट विवरण जहां ई–नीलामी दस्तावेज का पूरा विवरण देखा जा सकता है: https://ireps.gov.in/

ई–नीलामी में भाग लेने के लिए ठेकेदारों के लिए पूर्वापेक्षाएँ: आईआरईपीएस के ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के माध्यम से आयोजित ई नीलामी में भाग लेने के इच्छुक सभी (सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक/अनुसूचित वाणिज्यिक भारतीय बैंक/भारतीय सहकारी बैंक/व्हाइट लेबल एटीएम सेवा प्रदाता इत्यादि जिन्हें आरबीआई द्वारा एटीएम/डी.बी.यू./बैंकिंग इ–लॉबी स्थापित करने और संचालित करने की अनुमति/लाइसेंस प्राप्त है) को अपनी बोलियां जमा करने से पहले निम्नलिखित अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए:
– ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के लिए आईआरईपीएस पर पंजीकरण–ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के लिए सक्रिय आईआरईपीएस उपयोगकर्ता खाता; एकमुश्त पंजीकरण शुल्क का भुगतान; भारतीय स्टेट बैंक में चालू खाता; आईआरईपीएस खाते के साथ एस बी आई बैंक खाते का एकीकरण; फंड का लियन मार्किंग; कारोबार का अद्यतन विवरण; जिन ठेकेदारों के पास आईआरईपीएस के किसी भी मॉड्यूल के लिए आईआरईपीएस खाता नहीं है, वे आईआरईपीएस होम पेज पर नए विक्रेताओं/ठेकेदारों (ई–निविदा/ ई–नीलामी लीजिंग) लिंक पर क्लिक करके पंजीकरण के लिए अपना ऑन लाइन अनुरोध प्रस्तुत कर सकते हैं। ई–ऑक्शन लीजिंग मॉड्यूल के लिए अब वर्चुअल अकाउंट नंबर (वीएएन) नामक एक नयातंत्र शुरू किया गया है, जिसका उपयोग बोलीदाताओं द्वारा लियन मार्किंग तंत्र के विकल्प के रूप में किया जा सकता है। बोली लगाने हेतु प्रवेश करने से पहले किसी भी समय लियन मार्किंग मैकेनिज्म (यदि सक्रिय हो) और वैन मैकेनिज्म के बीच स्विच करने के लिए स्वतंत्र हैं। VAN तंत्र के लिए बोली लगाने वाले का भारतीय स्टेट बैंक में चालू खाता होना आवश्यक नहीं है। उपयोगकर्ता किसी भी बैंक में अपने किसी भी मौजूदा बैंक खाते से अपने VAN खाते में धन स्थानांतरित करने के लिए स्वतंत्र हैं, जो उन्हें IREPS ई–नीलामी में भाग लेने में सक्षम बनाता है।

सम्बंधित जानकारी हेतु रेलवे प्राधिकारी: वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक/पीएस, डीआरएम कार्यालय, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली 110055, Email: publicitycelldli@gmail.com Tel: 011-23743084

540/2025 वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/यात्री सेवा, उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल, नई दिल्ली

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

नेचुरोपैथी में बनाएं अपना कॅरियर

एक नेचुरोपैथ यानी प्राकृतिक चिकित्सक का वेतन काफी हद तक उसकी लोकेशन, विशेषज्ञता, योग्यता और अनुभव पर निर्भर करता है। वैसे शुरूआती तौर पर एक नेचुरोपैथ दस हजार से बीस हजार रूपए आसानी से कमा सकता है। एक बार अनुभव प्राप्त करने के बाद आपको आकर्षक वेतन मिल सकता है।

आज के समय में लोगों का लाइफस्टाइल जिस तरह का है, उसके कारण हर व्यक्ति किसी न किसी समस्या से ग्रस्त रहता ही है। लेकिन हर समस्या के लिए दवाइयों का इस्तेमाल करना उचित नहीं माना जाता। अगर आप भी लोगों का इलाज प्राकृतिक तरीके से करने में विश्वास रखते हैं तो नेचुरोपैथी में अपना भविष्य बना सकते हैं। यह एक ऐसी वैकल्पिक चिकित्सा है, जिसमें प्रकृति के पांच तत्वों की सहायता से व्यक्ति का इलाज किया जाता है। यह इलाज की एक बेहद पुरानी पद्धति है।

स्किल्स

इस क्षेत्र में कॅरियर देख रहे व्यक्ति को सामान्य चिकित्सा व मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त एक सफल नेचुरोपैथ बनने के लिए आपके भीतर धैर्य, कम्युनिकेशन और लिसनिंग स्किल्स, आत्मविश्वास, मरीज की जरूरतों को समझना, मोटिवेशनल्स स्किल्स व रोगियों के भीतर विश्वास पैदा करने का भी कौशल होना चाहिए।

क्या होता है काम

एक नेचुरोपैथ का मुख्य काम सिर्फ रोगी का इलाज करना ही नहीं होता, बल्कि वह अपने पेशेंट के खानपान और उसके लाइफस्टाइल में भी बदलाव करता है, ताकि व्यक्ति जल्द से जल्द ठीक हो सके। इतना ही नहीं, एक नेचुरोपैथ को मनोविज्ञान का भी ज्ञान होना चाहिए ताकि वह रोगी की स्थित किो समझकर उसे बेहतर उपचार दे सके।

योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर देख रहे छात्रों का भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीवविज्ञान में कम से कम 45 प्रतिशत अंक होने चाहिए। इसके बाद आप बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी और यौगिक साइंस कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें डिप्लोमा कोर्स भी अवेलेबल हैं।

संभावनाएं

एक नेचुरोपैथ वेलनेस सेंटर्स, न्यूटिशन सेंटर, हॉस्पिटल, हेल्थ केयर सेंटर आदि में जॉब तलाश सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप एकेडमिक्स, कम्युनिटी हेल्थ सर्विस केयर, सोशल वेलफेयर, मैन्युफैक्चरिंग और नेचुरल प्रॉडक्ट्स कंपनी आदि में भी काम कर सकते हैं। भारत में प्राकृतिक चिकित्सक सरकारी और निजी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में नियुक्त किए जाते हैं। वैसे लग्जरी होटल व हेल्थ रिसॉर्ट में भी नेचुरोपैथ सर्विसेज दी जाती हैं, वहां पर भी जॉब की जा सकती है। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न अखबार, मैगजीन में लिख सकते हैं या फिर खुद का यूट्यूब चैनल चलाकर भी अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। एक अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक खुद का सेंटर भी खोल सकता है।

आमदनी

एक नेचुरोपैथ यानी प्राकृतिक चिकित्सक का वेतन काफी हद तक उसकी लोकेशन, विशेषज्ञता, योग्यता और अनुभव पर निर्भर करता है। वैसे शुरूआती तौर पर एक नेचुरोपैथ दस हजार से बीस हजार रूपए आसानी से कमा सकता है। एक बार अनुभव प्राप्त करने के बाद आपको आकर्षक वेतन मिल सकता है।

प्रमुख संस्थान

- इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ योगा एंड नेचुरोपैथी, नई दिल्ली।
- महर्षि पतंजलि इंस्टीटयूट फॉर योगा नेचुरोपैथी एजुकेशन एंड रिसर्च, गुजरात।
- बोर्ड ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगा सिस्टम ऑफ मेडिसिन, मेरठ।
- सीएमजे यूनिवर्सिटी, मेघालय।
- प्रज्ञान इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, रांची।
- एसडीएम कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगा सांइस, कर्नाटक।
- हिमालयन यूनिवर्सिटी, ईटानगर।
- महावीर कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग, छत्तीसगढ़।

एक टैटू आर्टिस्ट का काम महज टैटू बनाना ही नहीं होता। वह सबसे पहले अपने क्लाइंट की जरूरत को समझता है और उसके अनुसार अपने क्लाइंट को कुछ बेहतरीन सुझाव देता है। अंत में वह टैटू बनाता है।

अगर आपको भी है टैटू बनाने का पैशन...

पिछले कुछ समय से टैटू बनवाने का क्रेज युवाओं में काफी बढ़ गया है। वैसे तो टैटू पुराने समय से बनाए जाते रहे हैं लेकिन कुछ सालों से इसके स्वरूप में काफी परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में सिर्फ आम लोग ही नहीं, बड़े-बड़े स्टार्स भी बॉडी पर टैटू बनवाते हैं, फिर चाहे बात दीपिका पादुकोण की हो या प्रियंका चोपड़ा की, हर कोई टैटू बनवा चुकी है। आज के समय में बहुत से ऐसे युवा हैं जो न सिर्फ टैटू बनवाने का क्रेज रखते हैं, बल्कि वह टैटू बनाना भी सीखना चाहते हैं। अगर आपको भी टैटू बनाने का पैशन है तो आप इस क्षेत्र में करियर की संभावनाएं देख सकते हैं-

क्या होता है काम

एक टैटू आर्टिस्ट का काम महज टैटू बनाना ही नहीं होता। वह सबसे पहले अपने क्लाइंट की जरूरत को समझता है और उसके अनुसार अपने क्लाइंट को कुछ बेहतरीन सुझाव देता है। अंत में वह टैटू बनाता है। इसके अलावा टैटू बनाने के बाद शुरूआत में स्किन की सही तरह से केयर करनी भी जरूरी होती है, इसलिए एक टैटू मेकर का काम है कि वह अपने क्लाइंट को स्किन केयर के बारे में भी सारी जानकारी दे ताकि उन्हें बाद में किसी तरह की परेशानी न उठानी पड़े।

स्किल्स

इस क्षेत्र की सबसे बड़ी जरूरत है आपका क्रिएटिव माइंड। आज के समय में पहले की तरह सिंपल टैटू नहीं बनाए जाते। इसलिए एक टैटू मेकर क्लाइंट की जरूरत को समझकर और अपनी क्रिएटिविटी का प्रयोग करके शरीर के विभिन्न

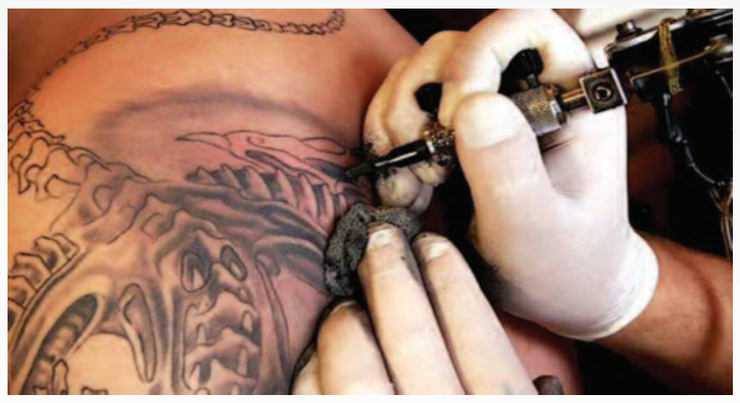

हिस्सों पर अलग-अलग कलर कॉम्बीनेशन और केमिकल्स के जरिए बेहतरीन आकृति को उकेरता है। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र में आपकी सफलता आपका पैशन तय करता है। अगर आप इस काम से दिल से प्यार करते हैं, तभी आपको इस क्षेत्र में कदम रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त एक टैटू मेकर को हमेशा अपडेट रहना चाहिए। उसे लेटेस्ट ट्रेंड की जानकारी होनी चाहिए। एक टैटू बनाना देखने में भले ही आसान लगे लेकिन यह एक कठिन काम है। इसमें आपको बेहद पेशेंस और एकाग्रता की जरूरत होती है। कई बार लोगों को टैटू से त्वचा में संक्रमण भी फैल जाता है।

इसलिए यह बेहद जरूरी है कि आप इससे भी अच्छी तरह वाकिफ हों और हर तरह की सावधानी बरतते हुए ही अपना काम करें।

योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर की संभावनाएं देख रहे छात्रों के लिए कोई मिनिमम योग्यता निर्धारित नहीं है। लेकिन टैटू बनाने में आजकल मशीनों का प्रयोग किया जाता है, इसके लिए आप किसी टैटू स्टूडियो या संस्थान से शॉर्ट टर्म कोर्स के जरिए टैटू मेकिंग सीख सकते हैं। यह कोर्स एक से दो महीने का होता है।

संभावनाएं

एक टैटू मेकर के लिए काम की कोई कमी नहीं है। टैटू मेकिंग का काम सीखने के बाद आप घर से ही काम की शुरूआत कर सकते हैं। अगर आप बजट अच्छा है तो अलग से टैटू मेकिंग स्टूडियो भी खोला जा सकता है। अगर आप क्लाइंट के घर जाकर काम कर सकते हैं तो ऑनलाइन काम को प्रमोट करना अच्छा रहेगा। इससे आपको कम समय में ही अच्छा काम मिलने लगेगा। इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े मॉल्स में भी टैटू मेकिंग का काम शुरू किया जा सकता है।

आमदनी

इस क्षेत्र में कमाई अनुभव और आपके काम के अनुसार बढ़ती है। वैसे कोर्स करने के बाद शुरूआती दौर में एक टैटू मेकर प्रतिमाह 15 से 20 हजार रुपए आसानी से कमा सकता है। लेकिन कुछ सालों के अनुभव के बाद जब आप अपना नाम स्थापित कर लेते हैं तो आपकी आमदनी लाखों में भी हो सकती है।

कम्युनिकेशन डिजाइनिंग से दें कॅरियर को एक नई उड़ान

कम्युनिकेशन डिजाइन से संबंधित इस कोर्स की अवधि चार वर्ष है। इस कोर्स के दौरान छात्रों में ऐसी समझ का विकास किया जाता है, जिससे खुले और निर्मित स्थानों में संचार के लिए सही परिवेश की स्थापना हो सके। इसके साथ ही ऐसे अनुभवों का निर्माण हो सके जिनके समर्थन से दर्शकों के समक्ष विचारों की व्याख्या हो सके। देश के प्रतिष्ठित संस्थान राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान डिजाइनिंग संबंधी कई कोर्स संचालित करता है। इन कोर्सेस में दाखिला लेकर छात्र न सिर्फ अपने सपनों को उड़ान दे सकते हैं, बल्कि सफलता की नई कहानी भी लिख सकते हैं। आज हम आपको राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान में संचालित विभिन्न कोर्स की जानकारी दे रहे हैं

बैचलर ऑफ डिजाइन बी.डेस

यह चार वर्षीय पाठ्यक्रम है जो आठ विषयों में उपलब्ध है। 12वीं स्तर के 20 वर्षीय विद्यार्थी इन कोर्सेस में दाखिला ले सकते हैं।

एनीमेशन फिल्म डिजाइन

कम्युनिकेशन डिजाइन से संबंधित इस कोर्स की अवधि करीबन चार वर्ष की होती है और इसमें महज 15 सीटें ही एनआईडी में उपलब्ध होती हैं। इस कोर्स को करने के बाद छात्र विभिन्न टीवी चैनल में एनिमेटर, करैक्टर डिजाइनर, स्टोरी बोर्ड आर्टिस्ट, क्रिएटिव डायरेक्टर, प्रोडूसर, कंसलटेंट आदि के रूप में काम कर सकते हैं या फिर खुद का बिजनेस भी शुरू कर सकते हैं।

सिरामिक एवं ग्लास डिजाइन

सिरामिक एवं ग्लास डिजाइन कला और रचनात्मकता के क्षेत्रों में शिल्प, वास्तु, चिकित्सा, सत्कार, सज्जा उत्पादों आदि शैलियों में कार्यात्मक सम्भावनायें भी प्रदान करता है। एनआईडी का यह विभाग भारतीय कला और शिल्प से प्रेरणा लेता है और छात्रों को भविष्य में बड़े पैमाने पर उत्पादन और नयी तकनीकों की क्षमता को समझने में मदद करता है। इस कोर्स को करने के बाद छात्र एनजीओ, डिजाइन स्टूडियो, शिल्प उद्योग में भी रोजगार के अवसर ढूंढ सकते हैं या खुद का बिजनेस भी शुरू कर सकते हैं।

एक्सबिशन डिजाइन

कम्युनिकेशन डिजाइन से संबंधित इस कोर्स की अवधि चार वर्ष है। इस कोर्स के दौरान छात्रों में ऐसी समझ का विकास किया जाता है, जिससे खुले और निर्मित स्थानों में संचार के लिए सही परिवेश की स्थापना हो सके। इसके साथ ही ऐसे अनुभवों का निर्माण हो सके जिनके समर्थन से दर्शकों के समक्ष विचारों की व्याख्या हो सके।

फिल्म व वीडियो कम्युनिकेशन

फिल्म व वीडियो कम्युनिकेशन कोर्स के तहत छात्रों को छोटी एजुकेशनल, कल्चरल, सोशल, एंटरटेनिंग व मार्केट कम्युनिकेशन संबंधी शार्ट फिल्में बनाने करने के लिए तैयार किया जाता है। इस कोर्स को करने के बाद छात्र ऑडियो-विजुअल कम्युनिकेशन के क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। ऐसे छात्रों के लिए एड एजेंसी, फिल्म प्रॉडक्शन हाउस, टीवी चैनल्स व अन्य कई सरकारी क्षेत्रों व एनजीओ के रास्ते हमेशा खुले रहते हैं।

फर्नीचर डिजाइन

फर्नीचर डिजाइन भी वास्तव में एक कला है और इस कला की पूरी जानकारी एनआईडी के चार वर्षीय फर्नीचर डिजाइन कोर्स से प्राप्त होती है। कोर्स में विभिन्न प्रकार के मैटीरियल, उनके इस्तेमाल और क्रिएटिविटी का इस्तेमाल करके कुछ नया बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

ग्राफिक डिजाइन

पिछले कुछ समय से ग्राफिक डिजाइनर की मांग काफी बढ़ी है। ऑनलाइन से लेकर ऑफलाइन तक लोग ग्राफिक्स का सहारा लेने लगे हैं। इसके जरिए चीजों को आसानी से समझा जा सकता है और यही कारण है कि यह कोर्स छात्रों के बीच खासा पसंद किया जाता है।

जीडीजीपी (ग्रेजुएट डिप्लोमा प्रोग्राम इन डिजाइन)

4 वर्ष का यह कोर्स विजयवाड़ा और कुरुक्षेत्र में उपलब्ध है। इसमें छात्रों का 12वीं पास होना आवश्यक है और उम्मीदवार की आयु 20 से अधिक न होनी चाहिए।

प्रॉडक्ट डिजाइन

प्रॉडक्ट डिजाइन उन वस्तुओं की रचना करना है, जो लोगों के लिए फायदेमंद है। वस्तुए बड़ी व्यवस्था का मुख्य अंश होती है। कोर्स के दौरान प्रोजेक्ट्स का मुख्य केंद्र उपयोगकर्ताओं की जरूरत, उत्पाद और आर्थिक प्रभाव के लिए प्रोडक्ट्स और सर्विसेज पर रहता है।

टेक्सटाइल डिजाइन

टेक्सटाइल डिजाइन के कोर्स के तहत छात्रों के भीतर कपड़ा अथवा टेक्सटाइल की समझ का ज्ञान विकसित किया जाता है। इस कोर्स की अवधि चार वर्ष है।

स्नातकोत्तर डिजाइन (एम.डेस)

किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र इस कोर्स में दाखिले के लिए आवेदन कर सकते हैं। 25 वर्ष की अवधि का यह कोर्स अहमदाबाद, बेंगलुरु और गांधीनगर कैंपसों में उपलब्ध है। इन कोर्सेस में दाखिला लेने वाले आवेदक की आयु 30 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह कोर्स लगभग 19 विषयों में उपलब्ध है, जो इस प्रकार है-

- ऐनीमेशन फिल्म डिजाइन
- अपैरल डिजाइन
- सिरामिक व ग्लास डिजाइन
- डिजाइन फॉर रिटेल एक्सपीरियंस
- डिजिटल गेम डिजाइन
- फिल्म व वीडियो कम्यूनिकेशन डिजाइन
- फर्निचर डिजाइन
- ग्राफिक डिजाइन
- इन्फोरमेशन डिजाइन
- इंटरैक्शन डिजाइन
- लाइफस्टाइल ऐक्सेसरी डिजाइन
- न्यू मीडिया डिजाइन
- फोटोग्राफी डिजाइन
- प्रोडक्ट डिजाइन
- स्ट्रैटिजिक डिजाइन प्रबंधन
- टेक्सटाइल डिजाइन
- टॉय ऐंड गेम डिजाइन
- ट्रांसपोर्टेशन व ऑटोमोबाइल डिजाइन
- यूनिवर्सल डिजाइन

हापुड़ में 40 केंद्रो पर होगी बोर्ड परीक्षा, जिलाधिकारी ने दिये सुरक्षा को लेकर निर्देश

आज का मुद्दा-हापुड़। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् प्रयागराज द्वारा आयोजित हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की बोर्ड परीक्षा वर्ष 2025 के सफल संचालन के सम्बन्ध में जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा, अपर जिलाधिकारी वि संदीप कुमार एंव अपर पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में जनपद के 40 परीक्षा केन्द्रों पर लगाये गये 03 जोनल मजिस्ट्रेट, 10 सैक्टर मजिस्ट्रेट, 40 स्टेटिक मजिस्ट्रेट, 40 केन्द्र व्यवस्थापक, 40 बाह्य अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापकों व जनपद में परीक्षा सम्बन्धी व्यवस्थाओं के दृष्टिगत मुख्य चिकित्सा अधिकारी, परिवाहन विभाग के अधिकारी, विद्युत विभाग के अधिकारी व सी०ओ (पुलिस) की बैठक ली गयी। अपर जिलाधिकारी (वि/रा), अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा परीक्षाओं के सफल संचालन के सम्बन में जारी शासनादेशों व विभागीय आदेशों के सम्बन्ध में समस्त अधिकारियों को अवगत कराया गया, जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा इस वर्ष परीक्षा के संचालन हेतु जारी नवीन व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में अवगत कराया कि परीक्षा की गोपनीय सामग्री को विद्यालय स्थित स्ट्रांग में 4 अलमारियों मे रखा जायेगा जो परीक्षावधि में लगातार सी०सी०टी०वी० कैमरों की निगरानी में रहेगी। कक्ष निरीक्षकों की उपस्थिति के सम्बन्ध में अवगत कराया गया कि यदि किन्ही तिथियों में कक्ष निरीक्षकों की कमी हो तो तत्काल जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अथवा अपने ब्लाक के ए०बी०एस०ए० से सम्पर्क कर शिक्षकों की मॉग परीक्षा तिथि से 02 दिन पूर्व कर लें। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि प्रश्न पत्रों के लीक होने की अफवाहों की सूचना यदि किसी केन्द्र व्यवस्थापक को किसी भी माध्यम से प्राप्त होती है तो वे तत्काल अपने जोनल मजिस्ट्रेट को सूचित करेगें।साथ ही उन्होंने कहा कि परीक्षा के दौरान कोई भी परीक्षार्थी यदि नकल करते हुए पकड़ा गया तो नकल अधिनियम में दण्ड (कारावास) व आर्थिक दण्ड की कठोरतम व्यवस्था की गयी हैं, इस सम्बन्ध में केन्द्र व्यवस्थापक अपने केन्द्र पर आने वाले समस्त कक्ष निरीक्षकों को जानकारी उपलब्ध करा दी जाए।बैठक में जनपद के 11 सी०बी०एस०ई० बोर्ड के परीक्षा केन्द्रों के केन्द्र व्यवस्थापक व 01 संस्कृत बोर्ड की परीक्षा के केन्द्र व्यवस्थापकों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया, सभी केन्द्र व्यवस्थापकों द्वारा जिला प्रशासन द्वारा की गयी व्यवस्थाओं के प्रति संतुष्टि व्यक्त की गयी।बैठक के अन्त में जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ विनीता के द्वारा जिलाधिकारी को धन्यवाद देते हुए बैठक का समापन किया गया।

भाजपा नेता पंकज सिंह निजी कार्यक्रम में हुए शामिल

आज का मुद्दा बुलंदशहर खुर्जा में एक निजी प्रोग्राम में पहुँचे भाजपा नेता पंकज सिंह ने मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति को लेकर कांग्रेस नेता के विरोध पर कहा कि कांग्रेस की बात हो या सपा की बात हो इन लोगों की हालत अब इस तरीके की है जब तक पहले मुख्य चुनाव आयुक्त काम कर रहे थे तो उनका भी विरोध कर रहे थे अब जब नई नियुक्ति हुई है तो उनके ऊपर भी प्रश्न उठा रहे हैं लोकतंत्र पर अब इन लोगों को विश्वास नहीं है किसी भी संवैधानिक संस्था के प्रति सम्मान उनके मन में बचा ही नहीं है इसी कारण इस तरीके के बयान यह दे रहे हैं। पश्चिम बंगाल में भाजपा विधायकों के निलंबन पर बोले वहां का संगठन इन सब चीज को दिखेगा राजनीतिक रूप से निर्णय लेंगे। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के भाषण को लेकर कहा झूठ के बुलंदों पर समाजवादी पार्टी की सरकार चला करती थी उनको इसके अलावा कुछ दिखाई नहीं देता आज हकीकत देखेंगे तो उत्तर प्रदेश पिछले 8 साल में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में जैसा बदला है सभी लोग देख रहे हैं। इसलिए समाजवादी पार्टी किया कहती है क्या नहीं कहती इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। -कुंभ को लेकर किए गए सवाल पर बोले कि समाजवादी पार्टी सनातन का हमेशा प्रश्न चिन्ह उठाते रहते हैं।

हापुड रेलवे स्टेशन की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई गई, डीएम एसपी ने हापुड़ रेलवे स्टेशन का किया औचक निरीक्षण

आज का मुद्दा-हापुड़। प्रयागराज में 2025 में होने वाले महाकुंभ मेले की तैयारियों को लेकर हापुड़ में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की जा रही है। इसी कड़ी में जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने हापुड़ जंक्शन रेलवे स्टेशन का औचक निरीक्षण किया। अधिकारियों ने स्टेशन मास्टर के साथ-साथ जीआरपी (सरकारी रेलवे पुलिस) और आरपीएफ (रेलवे सुरक्षा बल) के अधिकारियों के साथ स्टेशन परिसर का भ्रमण किया। निरीक्षण के दौरान कुंभ मेले में जाने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। डीएम प्रेरणा शर्मा और एसपी केजी सिंह ने संबंधित अधिकारियों को यात्रियों की सुगम और निर्बाध यात्रा सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान स्टेशन की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने के साथ-साथ यात्रियों की सुविधाओं पर भी चर्चा की गई। कुंभ मेले के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आवागमन को देखते हुए विशेष सुरक्षा प्रबंध किए जाएंगे।

हापुड़ में सरकारी दफ्तरो में सख्त नियम, बिना हेलमेंट और सीट बेल्ट वाले कर्मचारियों को नही मिलेगी एंट्री, होगी कार्यवाही

आज का मुद्दा-हापुड़। शासन के निर्देश पर डीएम प्रेरणा शर्मा के समस्त सरकारी व अर्द्ध सरकारी कार्यालयों में तैनात अधिकारी व कर्मचारियों को दोपहिया वाहनो पर हेलमेंट व गाड़ी में सीट बेल्ट लगाने के निर्देश दिये है। डीएम प्रेरणा शर्मा ने बताया कि उत्तर प्रदेश के सभी शासकीय एवं अर्द्ध-शासकीय कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारी जो दोपहिया वाहन से कार्यालय आते व आते समय हेलमेट अनिवार्य रूप से पहलने और उनके साथ यात्रा करने वाले सहयात्री के लिए भी हेलमेट पहनने के निर्देश दिये है। उन्होंने बताया कि जो भी अधिकारी कार से कार्यालय आते जाते है, वे अवश्य ही सीट बेल्ट पहनकर वाहन चलाए और वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करे। उन्होंने कहा कि निदेशों का उल्लंघन करने पर कार्यालय में एंट्री पर रोक व कार्रवाई की जाएगी।

हमीरपुर की लललपुरा पुलिस ने फरार चल रहे अभियुक्त को किया गिरफ्तार

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर की लललपुरा पुलिस ने अपराधियों की धरपकड़ के लिये चलाये जा रहे अभियान के तहतमु०अ०सं०-22/2025 धारा-74 बी०एन०एस० सहित 09/10 पॉक्सो एक्ट के मामले में फरार चल रहे थाना क्षेत्र के नेहरू निवासी 45 वर्षीय अभियुक्त दुल्लीचन्द पुत्र महेश्वरीदीन को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया है, जबकि अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में खासतौर से एस आई सुरेन्द्र कुमार सहित कांस्टेबल अनुरुद्ध कुमार शामिल रहे।

थाई भिक्षुओं ने केंद्रीय मंत्री को भेंट की बुद्ध की प्रतिमा

कुशीनगर। बुद्ध स्थली स्थित थाई बुद्धिस्ट मॉनेस्ट्री के प्रमुख भंते फ्राविडेश्वचिरायन (भंते सोम पोंग) ने केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को दया, करुणा, शांति के उपदेशक तथागत बुद्ध की प्रतिमा भेंट की। मंगलवार को केंद्रीय पर्यटन, सांस्कृतिक मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और प्रदेश के पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह कुशीनगर भ्रमण करकरे के क्रम में थाई बुद्ध बिहार पहुंचे। जहां थाई भंते सोम पोंग, भंते सोम क्रान और अन्य भिक्षुओं ने स्वागत किया। मंत्री गण ने मुख्य थाई मंदिर में पूजन अर्चन किया। भिक्षु सोम पोंग ने मंदिर के निरीक्षण के दौरान थाई संस्कृति, परम्परा, स्थापत्य कला की जानकारी दी। थाई मंदिर की सुंदरता और बागवानी को देख केंद्रीय मंत्री मुग्ध हो गए। उन्होंने कहा कि बुद्ध के उपदेश विश्व कल्याण के लिए है। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय, सांसद विजय दूबे, राज्यसभा सदस्य और पूर्व केंद्रीय मंत्री कुंवर आरपीएन सिंह, दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री राजेश्वर सिंह, पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी, नपाप अध्यक्ष किरन जायसवाल, प्रतिनिधि राकेश कुमार जयसवाल, डॉ अनिल कुमार सिन्हा, ओमप्रकाश कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

बौद्ध संग्रहालय द्वारा रूट्स आफ बुद्धिज्म अखिल भारतीय छायांकन कला प्रदर्शनी आयोजित

कुशीनगर। केंद्रीयमंत्री संस्कृति एवं पर्यटन विभाग, भारत सरकार गजेंद्र सिंह शेखावत एवं जयवीर सिंह मंत्री, संस्कृति एवं पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार के कुशीनगर आगमन पर राजकीय बौद्ध संग्रहालय द्वारा रूट्स आफ बुद्धिज्म अखिल भारतीय छायांकन कला प्रदर्शनी एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में बुद्ध इंटरमीडिएट कॉलेज के नेशनल कैडेट कोर के कैडेट्स की सहभागिता रही। साथ ही संग्रहालय के अज्ञेय स्मृति सभागार में राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत ₹सम्यक प्रबंधन और जातक अट्कथाएं₹ विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें डॉ० जसवीर सिंह चावला, अध्यक्ष, वाक चंडीगढ़ द्वारा अटकथाएं विभिन्न विद्यालयों से आए हुए बच्चों को सुनाई गई। इस अवसर पर यशवंत सिंह राठौर उपनिदेशक, राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर, नेशनल कैडेट कोर के कप्तान वेद प्रकाश मिश्रा, तेज प्रताप शुक्ल, तरुण शुक्ला, धीरेंद्र मिश्र, दिनेश दुबे, नसरुद्दीन बेग उपस्थित रहे।

सेवरही गन्ना शोध संस्थान द्वारा 9 जिले को 4122 कुंतल गन्ना बीज आबंटित

कुशीनगर। बसंतकालीन गन्ना बुवाई के लिए 2025-26 हेतु अपर गन्ना आयुक्त विकास एवं शोध समन्वय कार्यालय गन्ना आयुक्त लखनऊ वीके शुक्ला के निर्देश पर गेंदा सिंह गन्ना प्रजनन एवं अनुसंधान संस्थान सेवरही द्वारा 9 जिलों को 4122 कुन्तल अभिजनक गन्ना बीज (ब्रीडर सीड) का आवंटन किया गया है। यह जानकारी उत्तर प्रदेश गन्ना किसान संस्थान प्रशिक्षण केंद्र पिपराइच गोरखपुर के पूर्व सहायक निदेशक ओम प्रकाश गुप्ता ने देते हुए बताया कि गन्ने की उत्पादकता एवं चीनी परता बढ़ाने में गन्ना प्रजातियों का सबसे बड़ा योगदान है। गन्ने की चार प्रजातियां शीघ्र पकने वाली को. शा. 13235, को.लख. 14201, को. 0118, यू.पी. 05125 का 3273 कुंतल तथा 4 मध्य देर से पकने वाली प्रजातियां को.शा. 9232, को. से. 8452, को.से. 13452 तथा को. शा. 10239 का 849 कुंतल आवंटन हुआ है। गन्ना विकास परिषद परिक्षेत्र में पौधशाला भी कृषकों के खेतों पर स्थापित किया गया है। जहां बीज गन्ना उपलब्ध है। कुशीनगर जिला को 372 कुन्तल, देवरिया 204 कुन्तल, महाराजगंज 600 कुन्तल, मऊ-352 कुन्तल, बलिया-150 कुंतल, आजमगढ़ 700 कुंतल, बस्ती 690 कुंतल, सिद्धार्थनगर174 कुन्तल गन्ना बीज संवर्धन केंद्र लक्ष्मीपुर कुशीनगर के वरिष्ठ वैज्ञानिक कीट डॉ. वीके मिश्रा ने बताया कि इस केंद्र से 2909 कुन्तल आवंटन हुआ है। सेवरही गन्ना शोध के संयुक्त निदेशक डॉ. सुभाष सिंह के अनुसार गन्ना बीज का वितरण, गन्ना विकास विभाग द्वारा लिखे गए पत्र के आधार पर प्रारंभ कर दिया गया है, उपगन्ना आयुक्त गोरखपुर उषा पाल, उप गन्ना आयुक्त देवरिया एपी सिंह ने गन्ना बीज बुवाई के लिए संबंधित को निर्देश जारी कर दिया है। गन्ना शोध तकनीक को प्रयोगशाला से किसान के खेत पर पहुंचाने के लिए गोरखपुर - बस्ती-आजमगढ़ मंडल के 25 हजार गन्ना कृषकों को प्रशिक्षण सत्र 2024-25 में प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त गन्ना कृषकों को पश्चिमी उत्तर प्रदेश, करनाल, महाराष्ट्र प्रशिक्षण के लिए भेजा जाएगा। लाल बहादुर शास्त्री गन्ना किसान संस्थान लखनऊ के निदेशक श्री विश्वेष कनौजिया के मार्ग निर्देशन में उन्होंने सहायक निदेशक गन्ना किसान संस्थान पर पिपराइच गोरखपुर को निर्देश दिया है कि प्रशिक्षण का परिणाम कृषकों के खेतों पर दिखाई देना चाहिए।

सीडीओ ने सुनीं ग्रामीणों की समस्याएं

गोंडा में ब्लॉक आपके द्वार कार्यक्रम

गोंडा। के विकासखंड कटरा बाजार के ग्राम पंचायत खेमपुर में मंगलवार को 4 बजे मुख्य विकास अधिकारी अंकिता जैन ने 'ब्लॉक आपके द्वार कार्यक्रम' का आयोजन किया। कार्यक्रम में विभागीय अधिकारियों ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं। सीडीओ ने विभिन्न सरकारी योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। अधिकारियों ने प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना और स्वच्छ भारत मिशन की जानकारी दी। ग्रामीणों ने जल निकासी, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाओं और पेंशन संबंधी समस्याएं रखीं। कई समस्याओं का मौके पर समाधान किया गया।अधिकारियों ने कूड़ा प्रबंधन केंद्र का निरीक्षण किया। यहां व्यवस्थागत कमियां मिलीं। आयुष्मान आरोग्य केंद्र की सेवाओं और सामुदायिक शौचालय की स्थिति की भी समीक्षा की गई। साफ-सफाई और रखरखाव में सुधार के निर्देश दिए गए। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि और ग्राम प्रधान भी मौजूद रहे। अधिकारियों ने समस्याओं के प्राथमिकता से समाधान का आश्वासन दिया। इस पहल से ग्रामीणों में सरकार के प्रति विश्वास बढ़ा है। विकास कार्यों को गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा करने का भरोसा दिलाया गया।

पर्यटन के क्षेत्र में भारत एक बड़ा हब बनेगा: गजेन्द्र सिंह शेखावत

केंद्रीय और प्रदेश के पर्यटन, संस्कृति मंत्री ने बुद्ध का किया दर्शन पूजन

कुशीनगर। केंद्रीय पर्यटन, संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और प्रदेश के पर्यटन, संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह मुख्य महापरिनिर्वाण मंदिर पहुंचे जहां भिक्षु संघ कुशीनगर के अध्यक्ष एबी ज्ञानेश्वर, भंते डॉ नन्द रतन, भंते अशोक, भंते नंदिका और भिक्षुओं के धम्म वंदना के बीच सांसद विजय कुमार दूबे, पूर्व केंद्रीय मंत्री कुंवर आरपीएन सिंह, पूर्व सांसद राजेश पांडेय, भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय, राजेश्वर सिंह, पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी, नपा अध्यक्ष किरन जायसवाल व उनके प्रतिनिधि राकेश जायसवाल संग चीवर चढ़ाया और स्तूप की परिक्रमा की। केंद्रीय मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश पर्यटन विकास की इबारत लिख रहा है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं हैं। पर्यटन विकास की संभावनाओं को देखते हुए केंद्र सरकार, राज्य सरकार के पर्यटन विभाग समन्वित रूप से टीम बनाकर भविष्य की योजनाओं पर काम करेगी। जल निकासी, कांच का ध्यान केंद्र, रैंप निर्माण, पर्यटन विकास के लिए आए धन की रिपोर्ट मांगी, संस्कृति विभाग की भूमि को एक करने, एनएच 28 से बुद्ध मार्ग तक रोड कनेक्टिविटी, बीच में पड़ने वाली किसानों की जमीनों को चेंज करने आदि के निर्देश प्रशासन, पुरातत्व, पर्यटन को निर्देश दिए। इस दौरान पुरातत्व के रीजनल डायरेक्टर भोपाल भुवन विक्रम व उप निदेशक पर्यटन रविन्द्र कुमार, जिलाधिकारी विशाल भरद्वाज, सीडीओ गुंजन द्विवेदी, उपजिलाधिकारी परितोष मिश्रा, तहसीलदार धर्मवीर सिंह, क्षेत्राधिकारी कुंदन कुमार सिंह, एसएचओ कसया ओमप्रकाश तिवारी, लेखपाल नीलेश रंजन राव, गाइड डॉ अभय कुमार राय, अधीक्षक पुरातत्वविद अविनाश मोहंती, सहायक संरक्षण पुरातत्व शादाब खान, सहायक पर्यटन सूचना अधिकारी प्राण रंजन, डॉ अनिल कुमार सिन्हा, सभासद केशव सिंह, सुमिति त्रिपाठी, गोपालजी राय सहित अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

उत्तर रेलवे

ई–निविदा (ई–प्रोक्योरमेंट सिस्टम) के माध्यम से निविदा आमंत्रण

एनआईटी	53-2024-25-डब्ल्यू-5
काम का नाम (स्थान के साथ)	सहायक मंडल अभियंता हजरत निजामुद्दीन के तहत एसएसई/डब्ल्यू/एम/तुगलकाबाद के अनुभाग में तुगलकाबाद (डी एंड एफ) केबिन के यांत्रिक केबिन के बदले ईआई के प्रावधान के संबंध में सिविल का कार्य। **समान कार्य की प्रकृति** : ट्रैक कार्य के अलावा कोई भी सिविल कार्य।
काम की अनुमानित लागत रुपये	रुपये 17988934.97
अग्रिम राशि (रुपये)	(यह नेट बैंकिंग के रूप में होना चाहिए या केवल भुगतान गेटवे द्वारा 1) (नोटः– रेलवे बोर्ड के पत्र संख्या 2015/सीई–आई/सीटी/5/1 दिनांक 31.08.2016 के अनुसार जो टेंडर आईआरईपीएस पर आमंत्रित किया गया है उसमें एफडीआर को निविदा के लिए ईएमडी के रूप में, स्वीकार नही किया जाएगा। रुपये 240000.00
	06 महीने
निविदा प्रस्तुत करने और निविदा खोलने के लिए दिनांक और समय	14.03.2025 को 15.00 बजे तक तथा 14.03.2025 को 15.00 बजे निविदा खुलना है
वेबसाइट के विवरण का नोटिस बोर्ड स्थान निविदा का पूरा	यह निविदा आईआरईपीएस वेबसाइट अर्थात www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।

No. 128-W/280/OET/2024-25/W-V/NIT-53-2024-25-W-5
Date : 18.02.2025 567/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करवाना जिला प्रशासन का दायित्व- जिला निर्वाचन अधिकारी उत्तम सिंह

करनाल। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी उत्तम सिंह ने कहा कि निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करवाना ही प्रशासन का दायित्व है। जिला निर्वाचन अधिकारी उत्तम सिंह की अध्यक्षता में मंगलवार को लघु सचिवालय के सभागार कक्ष में संबंधित अधिकारियों और राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों की उपस्थिति में करनाल नगर निगम चुनाव के मद्देनजर ईवीएम व स्टाफ की रेंडमाइजेशन प्रक्रिया का पहला चरण सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारी उत्तम सिंह ने कहा कि करनाल नगर निगम चुनाव के लिए ईवीएम व स्टाफ के आबंटन के पहले चरण का रेंडेमाइजेशन किया गया है। निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार रेंडेमाइजेशन का उद्देश्य बिना किसी हस्तक्षेप के स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करना है। क्योंकि इस उद्देश्य के लिए समर्पित सॉफ्टवेयर द्वारा रेंडेमाइजेशन किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि मंगलवार को ही करनाल नगर निगम के लिए मशीनों की प्रथम रेंडमाइजेशन की गई। प्रथम रेंडमाइजेशन में 30 प्रतिशत ईवीएम और स्टाफ की रेंडमाइजेशन की गई है।

इस अवसर पर नगराधीश मोनिका, एएमसी धीरज कुमार, ईवीएम के नोडल अधिकारी एवं पंचायती राज के कार्यकारी अभियंता परमिंद्र, डीआईओ कमल त्यागी, चुनाव तहसीलदार जयबीर सिंह के अलावा राजनैतिक दलों में भाजपा से संजय मदान, आईएनएलडी से सुरजीत संधु, आप से रंजीत, सुखमन सिंह के अलावा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

किसानों को एकजुट होना होगा-रतनमान

करनाल। मुजफ्फरनगर में आयोजित की गई राष्ट्रीय किसान महापंचायत में किसानों के एक बड़े जत्थे ने कूच किया। जत्थे की अगुवाई भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष रतन मान ने की। मेरठ रोड के नगला चौक के समीप बड़ी संख्या में किसान एकत्रित हुए जहां से किसानों ने नारेबाजी करते हुए राष्ट्रीय किसान पंचायत में शामिल होने के लिए कूच किया। ओ उत्तरी हरियाणा प्रभारी मेहताब कादयान ने इस अवसर पर कहा कि किसानों को एकजुट होकर सरकार की किसान विरोधी नीतियों का मुकाबला करना होगा। प्रदेश अध्यक्ष रतन मान ने बताया कि इस राष्ट्रीय किसान महापंचायत का आयोजन राष्ट्रीय किसान मोर्चा के तत्वाधान में किया गया है। उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र सरकार द्वारा कृषि बाजार के लिए भेजा गया ड्राफ्ट पूर्ण रूप से किसानों को बर्बाद करने वाला है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जहां-जहां देश में डबल इंजन की सरकार है, वहां इस ड्राफ्ट को मंजूर किए जाने का अंदेशा है। उन्होंने कहा कि सभी किसानों को एकजुट होकर किसान विरोधी ड्राफ्ट को रद्द करवाने के लिए जोरदार आंदोलन करना होगा। नहीं तो अनाज मंडिया खत्म हो जाएंगी। इस अवसर पर प्रदेश संगठन सचिव श्याम सिंह मान, दीप राणा प्रदेश उपाध्यक्ष, हलका प्रधान गुरविंदर सिंह गोराया, साहब सिंह बाजवा, राजकुमार नौतना, अशोक रादौर, मानसिंह मुजाफ़त, बूटा सिंह, बलविंदर सिंह सिद्धू, वेदपाल सागवान, महेंद्र मढ़ान सहित काफी संख्या में किसान मौजूद थे।

सचिवालय परिसर की दिवारें बाल अधिकारों की पेटिंग से सजेगी-उपायुक्त डॉ.विरेन्द्र कुमार दहिया

पानीपत। जिला सचिवालय में मंगलवार को उपायुक्त डॉ.विरेन्द्र कुमार दहिया की अध्यक्षता में जिला बाल कल्याण संरक्षण समिति की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए उपायुक्त ने जिले में चल रहे बाल देख रेख केंद्रो की वर्तमान स्थिति के बारे में समीक्षा की व स्वास्थ्य विभाग द्वारा केंद्रों में बच्चों के किये जाने वाले त्रैमासिक मेडिकल के बारे में जानकारी ली। उपायुक्त ने कहा कि बाल देख रेख केंद्रो में रह रही बच्चों की किसी भी तरह की अनदेखी नहीं होनी चाहिए। उन्हें वो मूलभूत सुविधाएं मिलनी चाहिए जो बच्चों के लिए अनिवार्य है। विभाग के अधिकारियों को भी समय समय पर केंद्रो का निरीक्षण कर रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। उपायुक्त ने बैठक में जिला बाल संरक्षण समिति एवं बाल कल्याण समिति द्वारा बच्चों के फॉलोअप काउसलिंग की जानकारी भी ली। उपायुक्त ने अक्टूबर 2024 से जनवरी 2025 तक कितने जागरूकता शिविर आयोजित किये गए है इसके संदर्भ में भी अधिकारियों से अपडेट लिया। उपायुक्त ने कहा कि गैर संस्थागत स्कीम के तहत स्पोनशर शिप व पोस्टर केयर की स्कीम का लाभ जिन बच्चों को दिया जाता है। उन बच्चों के माता पिता की वार्षिक आय गांव में 72 हजार रूपये तथा शहर में रहने वाले माता पिता की वार्षिक आय 96 हजार रूपये से कम है। ऐसे बच्चों को 4 हजार रूपये प्रतिमाह उन बच्चों की शिक्षा व सही रख रखाव के लिए उनके माता पिता व संरक्षकों को दिए जाते है। ऐसे बच्चों की संख्या वर्तमान में 22 है। उपायुक्त ने पुलिस विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे इसकी जांच करें। क्या वे इसके पात्र है। इसमें सही पारदर्शिता बरती जा रही है इसका ब्यौरा जुटाएं। उपायुक्त ने मिशन वात्सलय स्कीम एवं बाल अधिकारों विषय पर सचिवालय परिसर में अच्छी पेटिंग जो आकर्षक हो लगाने व बच्चों के लिए ईनामी प्रतियोगिताएं करवाने के निर्देश भी दिए। बैठक में बाल कल्याण समिति चेयरमैन श्रीमति पदमा ने अक्टूबर 2024 से जनवरी 2025 तक प्रस्तुत हुए मामलों की समीक्षा की सूची भी उपायुक्त के सामने रखी। उन्होंने विस्तार से जानकारी ली। इस मौके पर जिला बाल संरक्षण अधिकारी निधि गुप्ता ने बैठक का ऐजेंडा उपायुक्त के समक्ष रखा व बाल केंद्रो व जागरूकता शिविरों के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर सीईओ जिला परिषद डॉ.किरण सिंह, पुलिस उप अधीक्षक सतीश वत्स, सहायक जिला लिगल सर्विस अथोरिटी प्रवेश शर्मा, डिप्टी सीएमओ डॉ.दिव्या, डीएसडब्ल्यू जयपाल सिंह, काजल देवी, एएलसी कर्मवीर, अधीक्षक शिक्षा विभाग बिजेन्द्र सिहं, एमडी रूपल जैन, वीना, सीडब्ल्यूसी मुकेश, अशोक, खेल प्रशिक्षक सुषमा आदि मौजूद रहें।

मतदाता प्रक्रिया को अधिकारी करें दुरस्त-एसडीएम ब्रह्मप्रकाश

पानीपत। एसडीएम ब्रह्मप्रकाश ने मंगलवार को जिला सचिवालय स्थित सभागार में नगरनिगम चुनाव से जुडे सुपरवाईजरों के साथ बैठक कर कुछ आवश्यक दिशानिर्देश दिए। एसडीएम ने कहा कि लोकतंत्र में मतदाता की अहम भूमिका होती है। हमें मतों के प्रतिशत को बढ़ाने के लिए ओर कार्य करने की जरूरत है। एसडीएम ने सभी सुपरवाईजरों को निर्देश दिए कि वे ग्रास रूट पर कार्य करने वाले बीएलओ के साथ समन्वय स्थापित करके यह सुनिश्चित करें कि जो मतदाता मृत्यु को प्राप्त हो चुके है व उनके वोट काटें व जो मतदाता 18 वर्ष के हो चुके है उनका वोट बनायें व वोट के प्रति उन्हें और जागरूक करें। एसडीएम ने कहा कि कुछ मतदाता स्थानातंरण होने के कारण अपना वोट नहीं स्थानातरित नही करवा पायें व उनका दोनों स्थानों पर वोट है यह सुनिश्चित करें कि उनका एक ही स्थान पर वोट हों। उन्होंने सभी सुपरवाईजर को निर्देश दिए कि वे इस संदर्भ में रोजाना बीएलओ से रिपोर्ट ले व आगे भेजें ताकि वोटों की इस प्रक्रिया को सही तरह से व्यवस्थित किया जा सकें। इस मौके पर शिक्षा विभाग से प्रिंसीपल पवन, विनोद सिंगला, चुनाव कार्यालय से कानूनगो सोनिया, महेन्द्र के अलावा प्रदीप, मनजीत, रविन्द्र, मुकेश शास्त्री, कृषि विभाग के सुधीर आदि मौजूद रहें।

नीलोखेड़ी नगरपालिका चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए कुल 8 उम्मीदवारों में से 3 उम्मीदवारों के नामांकन हुए रद्द

करनाल/नीलोखेड़ी। नीलोखेड़ी के एसडीएम एवं रिटर्निंग अधिकारी अशोक कुमार ने बताया कि नीलोखेड़ी नगरपालिका चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए कुल 8 उम्मीदवारों ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया था। इन 8 उम्मीदवारों में से 3 का नामांकन जांच के दौरान कमी पाए जाने पर रद्द कर दिया गया और 5 उम्मीदवारों के नामांकन सही पाए गए हैं, इनमें भारतीय जनता पार्टी से सनमीत कौर, निर्दलीय उम्मीदवार प्रेम कुमार, तेजिंद्र सिंह, जगरूप सिंह और जगजीत का नाम शामिल है। जिन तीन उम्मीदवारों के नामांकन रद्द हुए हैं उनमें निर्दलीय उम्मीदवार स्वर्ण सिंह, कोमल और बीजेपी के वैकल्पिक प्रत्याशी के तौर पर नामांकन भरने वाले हरप्रीत सिंह आहूजा का नाम शामिल है।

उन्होंने बताया कि नीलोखेड़ी नगर पालिका के सभी वार्डों के चुनाव के लिए कुल 57 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किए ,इनमे वार्ड नम्बर- 1 से कुल 4 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। इनमें सविता भाटिया, रीटा आनंद, हरविंद्र कौर, अर्जुन दास ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। उन्होंने बताया कि वार्ड नम्बर- 2 से कुल 4 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र

दाखिल किया । इनमें सुखविंद्र कौर, प्रिया चौपडा, अंजना कुमारी, रामा कुमारी निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। वार्ड नम्बर- 3 से कुल 3 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। इनमें सुखविंद्र कनवाल, सिया मेहता, साहिल मेहता, ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए।

उन्होंने बताया कि वार्ड नम्बर- 4 से कुल 4 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें धर्मेंद्र कुमार, निर्मला, मृदुल चौपड़ा, हरप्रीत कौर ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। वार्ड नम्बर- 5 से कुल 4 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें रणबीर सिंह भाटिया, सुषमा भाटिया, अंशु शर्मा, कपिल शर्मा ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए।

उन्होंने बताया कि वार्ड नम्बर- 6 से कुल 7 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें आरती, मनोज, मुकेश कुमार, निशा देवी, राजेश कुमार, बबीता चरनालिया, मुनीश कुमार ने आजाद उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए।वार्ड नम्बर- 7 से कुल 3 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। इनमें प्रवीन कुमारी, रणजीत सिंह, कृष्ण लाल ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए।

उन्होंने बताया कि वार्ड नम्बर- 8 से कुल 5 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। इनमें अंजू, परमजीत कौर, रीना, प्रियंका कांगड़ा, दर्शनी देवी ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। वार्ड नम्बर- 9 से कुल 2 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें रजविंद्र कौर व नीता देवी ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए।

उन्होंने बताया कि वार्ड नम्बर- 10 से कुल 4 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें अमित चावला, नवजोत सिंह, रेणूका रानी, मनोज कुमार चावला ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। वार्ड नम्बर- 11 से कुल 6 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें सुषमा रानी, शीला रानी, विपिन कुमार, पंकज, विरेंद्र पाल कौर, गुरविंद्र सिंह ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए।

उन्होंने बताया कि वार्ड नम्बर- 12 से कुल 5 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें नीरू जुनेजा, भूपेश जुनेजा, मेघा धमीजा, पारस खुराना व लक्ष्य खुराना ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। वार्ड नम्बर- 13 से कुल 4 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें मधुबाला, पूजा रानी, कृष्णा कुकरेजा व भूमिका कुकरेजा ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामांकन सही पाए गए। वार्ड नम्बर- 14 से कुल 2 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया । इनमें रजवंत कौर व पूजा रानी ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन भरा। सभी नामाकंन सही पाए गए।

उन्होंने यह भी बताया कि तरावड़ी नगरपालिका के वार्ड नम्बर-5 के उप-चुनाव के लिए कुल 4 उम्मीदवारों ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इनमें बलबीर कुमार, कृष्ण, रोहित कुमार व कमल का नाम शामिल थे, सभी के नामांकन सही पाए गए हैं।

उन्होंने बताया कि चुनाव के लिए आवेदन करने वाले प्रत्याशी 19 फरवरी को सुबह 11 बजे से 3 बजे तक नाम वापस ले सकते हैं। इसके उपरांत 19 फरवरी को दोपहर तीन बजे प्रत्याशियों को चुनाव चिन्ह आवंटन कर दिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि 2 मार्च को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान करवाया जाएगा। वहीं 12 मार्च को सुबह 8 बजे से मतगणना करवाई जाएगी।

सफलता के लिए जरूरी है लक्ष्य तय करना एच.सी.एस. नितिश सेलपाड़

हिसार। हनुमान कालोनी हिसार कैंट स्थित दिव्य ज्योति सेंट्रल स्कूल का पंद्रहवां वार्षिक समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि नितिश सेलपाड़, एच. सी. एस. अधिकारी एक्साइज एंड टैक्सेशन विभाग मौजूद रहे, जबकि जिला पार्षद अनिल शर्मा अति विशिष्ठ अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। यह जानकारी देते हुए दिव्य ज्योति सेंट्रल स्कूल के संचालक अनिल शर्मा सातरोड़िया ने बताया कि उपरोक्त स्कूल के नन्हे मुन्ने बच्चों ने स्कूल प्रांगण में उपस्थित अभिभावकगण एवं अन्य दर्शकों के सामने अपनी-अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उनका भरपूर मनोरंजन किया। इस स्कूल में सर्वाधिक प्रस्तुतियां सेना एवं सैनिकों से जुड़ी हुई थी। इस दौरान मुख्य अतिथि नितिश सेलपाड़ एच. सी. एस. अधिकारी एक्साइज एंड टैक्सेशन ने अपने संबोधन में जीवन में लक्ष्य तय करने के सफलता के लिए लक्ष्य तय करने एवं उसे प्राप्त करने के लिए शॉर्ट टर्म एवं लांग टर्म की प्लानिंग करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यदि विधार्थी बचपन से ही अपना लक्ष्य तय कर लेता है तो उसे कामयाबी हर हाल में मिलना तय है। इससे पहले मुख्य अतिथि श्री सेलपाड़ कहा कि विधार्थी जीवन में शिक्षा के साथ साथ सामाजिक

संस्कार लेना भी जरूरी है। उन्होंने स्कूल प्रधानाचार्या डॉ स्वाती शर्मा के साथ साथ बाल वाटिका में पढ़ाने वाले नन्हे मुन्ने बच्चों को सांस्कृतिक शिक्षा देने वाली शिक्षिकाओं को भी उनके सफल आयोजन के लिए भी बधाई दी। स्कूल प्रधानाचार्या डॉ स्वाती शर्मा ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ साथ सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों में भाग लेने से बच्चों का मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है। अंत में स्कूल संचालक अनिल शर्मा सातरोड़िया ने अपने संबोधन में स्कूल प्रांगण में आए हुए सभी अतिथि महोदय, अभिभावक गण एवं अन्य दर्शकों का धन्यवाद किया और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की । इस दौरान स्कूल के डॉ निधि शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर भौतिक विज्ञान, रविन्द्र अत्री प्रधान स्कूल युनियन हांसी, पृथ्वी कौशिक, सतपाल कौशिक, नीरज शर्मा, अशोक बब्बर, शिक्षाविद राजेश शर्मा, प्रदीप शर्मा शिक्षिका नर्मता, संगीता शर्मा, सोनू, नीलम, सोनिया, आक्षांक्षा, अंजू, नीलम, ज्योति आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे।

हकृवि में 'मशरूम उत्पादन तकनीक' पर प्रशिक्षण संपन्न

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में 'मशरूम उत्पादन तकनीक' पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न हुआ। समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में हरियाणा व राजस्थान प्रांत के 74 युवक एवं युवतियों ने भाग लिया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, केंचुआ खाद उत्पादन, संरक्षित खेती, बेकरी, फल व सब्जी सहित विभिन्न प्रकार के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने के प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण अनुकूल प्रक्रिया होने के साथ-साथ किसानों के लिए स्वरोजगार का एक बेहतर विकल्प है। इस व्यवसाय से भूमिहीन युवा भी कम लागत में एक अच्छा रोजगार स्थापित कर सकते हैं। मशरूम के उत्पादन के साथ-साथ इसका प्रसंस्करण करके या मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करके भी अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किए। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मशरूम उत्पादन से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है क्योंकि यह एक संतुलित आहार है, जिसमें कई तरह के खनिज, विटामिन, अमीनों एसीड्ज, प्रोटीन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के साथ-साथ यह कई तरह के औषधीय गुणों से भरपूर है। संस्थान के सह- निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि पिछले कई वर्षों से मशरूम की खेती की तरफ किसानों का रुझान बढ़ा है। उन्होंने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. सतीश कुमार मेहता, डॉ. ओमप्रकाश बिश्नोई, डॉ. विकास काम्बोज, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. डी.के. शर्मा, डॉ. सरदूल मान, डॉ. भूपेंद्र सिंह व डॉ. पवित्रा मोर्य पुनिया ने भी मशरूम उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

नामांकन यात्रा मेयर पद प्रत्याशी रेणु बाला गुप्ता

करनाल। करनाल नगर निगम चुनाव के लिए भाजपा की मेयर पद प्रत्याशी रेणु बाला गुप्ता की नामांकन यात्रा में हजारों लोगों ने शामिल होकर विजयी भव का आशीर्वाद दिया। नामांकन यात्रा में शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा, पूर्व विधानसभा स्पीकर ज्ञानचंद गुप्ता, करनाल विधायक जगमोहन आनंद व सांसद प्रतिनिधि कविंद्र राणा विशेष रूप से मौजूद रहे। इससे पहले अग्रवाल धर्मशाला में हवन यज्ञ कर चुनाव कार्यालय का उदघाटन किया गया। इस दौरान भाजपा के सभी पार्षद प्रत्याशी मंच पर मौजूद रहे। नामांकन यात्रा का शहरवासियों ने जोरदार भव्य स्वागत किया। दुकानदारों और व्यापारियों ने रेणु बाला गुप्ता को फूल मालाएं भेंट की। भाजपा कार्यकर्ता खुशी में नाचते हुए साथ-साथ चले।

इस अवसर पर शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने कहा कि भाजपा उम्मीदवार रेणु बाला गुप्ता ने सोमवार को नामांकन भर दिया है। आज से चुनाव में गति आनी शुरू हो गई है। उन्होंने कहा कि लोगों का विश्वास और प्यार करनाल विधायक जगमोहन आनंद तथा मेयर प्रत्याशी रेणु बाला गुप्ता के प्रति बहुत ज्यादा है। मंत्री ने दावा करते हुए कहा कि भाजपा रिकार्ड तोड़ मतों से जीतेगी। भाजपा ने सुशासन दिया है। भ्रष्टाचार खत्म करने का काम किया है। ट्रिपल इंजन की सरकार बनाकर विकास के नए आयामों को छुएंगे।

मेयर प्रत्याशी रेणु बाला गुप्ता ने कहा कि करनाल की जनता ने पहले दो बार उन्हें अपने आशीर्वाद देकर मेयर चुनकर जनता की सेवा करने का अवसर प्रदान किया है। अब तीसरी बार भी वह जनता से अपील करती हैं कि उन्हें मेयर चुने और सभी 20 वार्डों में भाजपा प्रत्याशियों को विजयी बनाएं। सभी 20 पार्षद और वह मिलकर करनाल का विकास करवाएंगे। रेणु बाला गुप्ता ने भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश नेतृत्व का आभार प्रकट किया।

नगर निकाय चुनाव के लिए करनाल प्रभारी ज्ञान चंद गुप्ता ने कहा कि नामांकन यात्रा के दौरान लोगों में जोश देखने को मिला। जगह-जगह जोरदार स्वागत व अभिनंदन किया गया। जनता ने स्पष्ट कर दिया है कि रेणु बाला गुप्ता तीसरी बार मेयर बनेंगी और सभी वार्डों में भाजपा प्रत्याशी जीत दर्ज करेंगे। ट्रिपल इंजन की सरकार

विधायक जगमोहन आनंद ने कहा कि नामांकन यात्रा के दौरान जनता का आशीर्वाद मिला है। आज से चुनाव प्रचार शुरू हो गया है। घर-घर जाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की जनहितेषी सोच का प्रचार करेंगे। भाजपा की जनकल्याणकारी नीतियों से लोगों को अवगत करवाया जाएगा। करनाल में विकास कार्य नॉनस्टॉप होंगे। उन्हें विश्वास है कि पूरे प्रदेश में भाजपा जीत का परचम लहराएगी। इस अवसर पर कार्यकारी जिला प्रधान बृज गुप्ता, असंध विधायक योगेंद्र राणा, जिला प्रभारी भारत भूषण जुआल, पूर्व उद्योग मंत्री शशि पाल मैहता, जिला उपाध्यक्ष प्रवीण लाठर, जिला महामंत्री सुनील गोयल, पूर्व जिलाध्यक्ष अशोक सुखीजा, कर्ण मंडल अध्यक्ष नवीन बत्रा, शहरी मंडल अध्यक्ष मोहन लोधी, राम नगर मंडल अध्यक्ष मोहित सचदेवा,अर्बन मंडल अध्यक्ष गौरव खुराना,वरिष्ठ भाजपा नेता भगवान दास अघी, भारत भूषण कपूर, सोनिया पंडित, इंदर गेरा व जिला प्रमुख भाजपा आईटी सेल करनाल विकास कथुरिया, महामंत्री सुनील गोयल, श्याम बत्रा, पूर्व सीनियर डिप्टी मेयर कृष्ण गर्ग, सुनील मदान, विकास राणा व विनोद शर्मा, मनमीत रमेश मिड्ढा व अमित खुराना सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

अवैध हथियार के साथ एक आरोपी गिरफतार

करनाल। जिला पुलिस की थाना सैक्टर-32.33 टीम द्वारा गुप्त सुचना के आधार पर छापामारी करके नूर महल चौंक, करनाल से आरोपी अंकुश पुत्र जयपाल निवासी गांव शामडी, सोनीपत को गिरफतार किया। आरोपी के कब्जे से मौके पर एक अवैध देशी पिस्तौल 32 बोर बरामद की गई।

इस संबध में अनुसंधान अधिकारी साहयक उप निरक्षक सतीश कुमार ने बताया की जांच के दौरान पाया की आरोपी पहले भी आर्म्स एक्ट व हत्या के मामले में जेल जा चुका है। व आरोपी को आज माननीय अदालत के सामने पेशकर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

नागरिकों के भविष्य को खुशहाल बनाने में मददगार साबित होते जनता समाधान शिविर-उपायुक्त डॉ. विरेन्द्र कुमार दहिया

पानीपत। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह प्रदेश के आम व्यक्ति की चिंता करते हैं। उनकी सोच का आकार बहुत ही विस्तृत है। हर विकास कार्य में उनकी सकारात्मक सोच दिखाई पड़ती है। प्रदेश के हर वर्ग के उत्थान को लेकर मुख्यमंत्री स्वयं संज्ञान लेते हैं व उनपर अधिकारियों को अमल करने के लिए प्रेरित करते हैं। जनता समाधान शिविर भी मुख्यमंत्री की दूरगामी सोच है जिसका लाभ प्रदेश के कौने -कौने में लागों को मिल रहा है।

मंगलवार को जिला सचिवालय में उपायुक्त डॉ. विरेंद्र कुमार दहिया ने जन समस्याओं की सुनवाई करते हुए कहा कि अधिकारियों के समक्ष जन समस्याओं का समाधान करने के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण है। किसी भी तरह का उन पर दबाव नहीं है। उनके लंबे अनुभव का फायदा नागरिकों को अगर समय पर मिलता है तो यह शासन व प्रशासन के लिए बहुत ही खुशी की बात है। लोग प्रसन्नचित होकर जनता समाधान शिविर से अपनी समस्याओं का निदान करवाकर घर जायें तो इससे प्रकृति भी खुश होती है।

उपायुक्त ने कहा कि जनता समाधान शिविर में आने वाली हर समस्या रूपी ताले की चाबी अधिकारियों के पास है। उसका सही तरीके से उपयोग हमें करके जनता के भविष्य को खुशहाल बनाने का प्रयास करना है। हमें अपने कर्त्तव्य में किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरतनी है। अपनी प्रतिभा का उपयोग जन समस्याओं के समाधान के लिए करना होगा।

उपायुक्त ने कहा कि समाधान शिविर जरूरतमंदों के लिए संजीवनी का कार्य करता है। समाधान शिविर में आने वाली ज्यादातर समस्याओं का ताल्लुक उन जरूरतमंद नागरिकों से है जो अपनी समस्याओं को लेकर समाधान करवाने के लिए बैचेन थे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे शिविर में आनी वालों समस्याओं का समाधान तत्काल करें ताकि समाधान शिविर की गरिमा बरकार रहें।

पुलिस अधीक्षक लोकेन्द्र सिंह ने समाधान शिविर में पुलिस विभाग से संबंधित आई समस्याओं का समाधान करने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे समस्याओं को पहले समझे, उनकी गंभीरता में जाएं व जल्द से जल्द उसका समाधान करें। आम जन की समस्याओं की समाधान करने का हमारा अहम दायित्व है। यह हर अधिकारी को समझना चाहिए व इस पर अमल करना चाहिए।

पुलिस अधीक्षक ने कहा कि पुलिस विभाग से संबंधित जो समस्याएं आ रही है उन्हें टेबल पर न रोके। जितना जल्दी हो सके उसका समाधान करें। प्रार्थी जयपाल मलिक वासी सैक्टर 6 ने उपायुक्त से अनुरोध किया कि सैक्टर 6-7 का डिवाडिंग रोड़ बनाया जाएं ताकि वहां पर होने वाली दुर्घटना से बचाव किया जा सकें। उन्होंने बताया कि गलत साइड से लोगों के आवगमन से कई बार दुर्घटना होने का खतरा बन जाता है। अगर 50 मीटर तक का रोड़ बनाया जाएं तो काफी हद तक दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है। उपायुक्त ने संबंधित विभाग के अधिकारी को जांच के निर्देश दिए।

प्रार्थी मोहित वासी बड़ौली ने प्रशासन से अवैध निर्माण को रूकवाने के लिए आवेदन किया। उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में वे पहले भी संबंधित विभाग को अपनी अर्जी दे चुके है। अवैध निर्माण करने वालों पर अभी तक कोई कानूनी कार्यवाही नहीं हो पाई है। उपायुक्त ने संबंधित विभाग को जांच के आदेश दिए।

प्रार्थी रघुवीर वासी डाहर ने उपायुक्त से अनुरोध किया कि उनकी आयु 49 वर्ष हो चुकी है। लेकिन अभी तक उन्हें अविवाहित पैंशन का लाभ नहीं मिल पाया है। उपायुक्त ने डीएसडब्लयूओ को जल्द से जल्द पैंशन बनवाने के निर्देश दिए।

प्रार्थी नरेन्द्र, कपिल, मनोज, संदीप, पंकज व नवीन ने उपायुक्त से अनुरोध किया कि वे पिछले 10 वर्षो से अनुमन तौर पर लगे कच्चे कर्मचारी है। उन्हें सर्विस अधीनियम 2024 का लाभ नहीं मिल पाया है। समय पर वेतन का भुगतान भी नहीं हो पाया है। उन्होंने उपायुक्त से न्याय दिलवाने की गुहार लगाई। उपायुक्त ने एचएसएएमबी के कार्यकारी अभियंता को जांच के निर्देश दिए।

प्रार्थी पायल ने उपायुक्त से अनुरोध किया कि उन्होंने जाति प्रमाण पत्र के लिए आवेदन किया था लेकिन जाति वैरीफाई होने के बाद भी उन्हें लाभ नहीं मिल पाया है। उन्होंने उपायुक्त से जाति प्रमाण पत्र उपलब्ध करवाने का अनुरोध किया। उपायुक्त ने तहसीलदार को जांच के निर्देश दिए।

इस मौके पर एडीसी डॉ. पंकज यादव, एमडी शुगरमील मनदीप, सीएमओ जंयत आहुजा, डीटीओ हजारा सिंह, पीडब्ल्यूडी के कार्यकारी अभियंता सवित पान्नू, पब्लिक हैल्थ के कार्यकारी अभियंता करण बहल, एसडीओ एचएसवीपी सूबे सिंह, बिजली बोर्ड के एक्शन सुरेश हुडडा, माइनिंग अधिकारी नरेन्द्र सिंह, एचआईडीसी प्रबंधक कुश, आईटीआई प्रिंसीपल डॉ. कृष्ण, कृषि विभाग एसडीओ डॉ.राजेश भारद्वाज, सहायक रोजगार अधिकारी विनीता, पशुपालन विभाग के अशोक लोहान, जिला पुलिस कैप्लेड अधिकारी सुरेश, जोगेन्द्र के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

स्कूल से घर वापस आरहे छात्र की गिरने से मौत, परिजनों में कोहराम

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा

थाना रिसिया के समसा तरहर गांव निवासी एक छात्र स्कूल से वापस अपने घर अन्य मित्रों संग आ रहे थे, रास्ते में खेत किनारे लगे तार पर गिर जाने से उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव कोपोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। रिसिया थाना क्षेत्र के समसा तरहर गांव निवासी सोनू चौहान पुत्र लवकुश(14) गांव में स्थित निजीस्कूल में कक्षा नौ का छात्र था।

सोमवार को कक्षा 10 के छात्रों की विदाई समारोह कार्यक्रम था। जिसमें सोनू भी शामिल हुआ। दोपहर तीन बजे के बाद कार्यक्रम खत्म होने पर सोनू अन्य साथियों के साथ वापस घर के लिए रवाना हुआ। परिवार के सूरज चौहान ने बताया कि घर आते समय एक खेत के निकट तार पर सोनू गिर गया। जहां उसे सीएचसी में ले जाया गया, लेकिन मौके पर ही उसकी मौत हो चुकी थी। डॉक्टर ने छात्र को मृत घोषित कर दिया। इस पर परिवार में कोहराम मच गया। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थानाध्यक्ष राजनाथ सिंह ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद मौत के सही कारणों की जानकारी हो सकेगी।

हरिदास धाम में श्रद्धांजलि सभा 19 फरवरी को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी) वृन्दावन। गोपाल खार (निकट सी.के. पब्लिक स्कूल, परिक्रमा मार्ग)स्थित श्रीहरिदास धाम में श्रीहरिदासीय सम्प्रदायाचार्य व श्रीबांकेबिहारी मंदिर के सेवाधिकारी निकुंजवासी ललित वल्लभ गोस्वामी की धर्म पत्नी श्रीमती सुशीला देवी गोस्वामी के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 19 फरवरी 2025 (बुधवार) को अपराह्न 03 से 04 बजे पर्यन्त किया गया है। ज्ञात हो कि भक्तिमती व परम विदुषी सुशीला देवी गोस्वामी का निकुंज प्रवेश विगत 16 फरवरी को 80 वर्ष की आयु में हो गया था।वे अपने पीछे तीन पुत्र राष्ट्रीय ब्राह्मण सेवा संघ के अध्यक्ष आचार्य आनन्द वल्लभ गोस्वामी, प्रख्यात साहित्यकार आचार्य प्रेम वल्लभ गोस्वामी (आशुकवि), प्रख्यात इतिहासकार प्रह्लाद वल्लभ गोस्वामी व डॉ. ब्रजरानी आदि का भरा पूरा परिवार छोड़ गईं हैं।

बहराइच पुलिस का एक्शन प्लान, शहर को जाम से निजात दिलाएंगे यह खास जवान

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा रिर्जव पुलिस लाइन परिसर में यातायात कार्यालय में मंगलवार को आईआर ने जवानों के साथ बैठक की। बैठक में अतिक्रमण और जाम से निजात दिलाने पर बल दिया गया। शहर में जाम चारों तरफ आम लोगों को परेशान किए हुए है। जाम के चलते लोगों को 100 मीटर की दूरी घंटों में तय करनी पड़ती है। इसको देखते हुए मंगलवार को यातायात निरीक्षक बीके मिश्रा ने पुलिस और होमगार्ड जवानों के साथ बैठक की।यातायात निरीक्षक ने कहा कि नियम तोड़कर वाहन का संचालन करने वाले लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की जाए। सड़क किनारे पार्क हुए वाहनों को कब्जे में लेकर कार्रवाई की जाए। विभिन्न चौक चौराहों पर तैनात होमगार्ड जवान वाहनों को निरन्तर आगे बढ़ाने में सहयोग करें। जिससे जाम की स्थिति उत्पन्न न हो। इस दौरान यातायात पुलिस कर्मी और होमगार्ड जवान मौजूद रहे।

बाइक से बाइक की टक्कर में एक की मौत

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा थाना रिसिया के नरसिंह डीहा से कटिलिया मार्ग पर भग्गड़वा के निकट बाइक से बाइक की टक्कर में 45वर्षीय अधेड़ की मौत हो गई है। जिसके शव का को कब्जे में लेकर पुलिसपोस्टमार्टम करा रही है। थाना रिसिया के परसा कोदी खा निवासी धन्नी पुत्र बशीर उम्र 45वर्ष अपनी बाइक से ग्राम डिहवा में एक कार्यक्रम में गए थे,दोपहर दो बजे के आस पास डिहवा से वापस अपने गांव जा रहे थे, भग्गड़वा के निकट एक साइकिल की दुकान के पास खड़े होकर बात कर रहे थे,उसी समय विपरीत दिशा से आए बाइक सवार ने ठोकर मार दी, इस टक्कर से धन्नी के सिर में गंभीर चोटे आई,जिन्हे जिला अस्पताल रेफर किया गया,तथा दूसरा बाइक सवार आनंद पुत्र सीता राम निवासी पूरे अलस्त खा को भी काफी चोटे आई है। जिसे रिसिया सी एच सी पर भर्ती कराया गया है।

12 साल की मासूम से दुकान में दरिंदगी:स्कूल जाते समय गैर समुदाय के दुकानदार ने खींचकर किया रेप, बजरंग दल ने किया प्रदर्शन,आरोपी गिरफ्तार

पोषित कुमार(आज का मुद्दा) अनूपशहर: अनूपशहर में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां स्कूल जा रही 12 वर्षीय छात्रा के साथ गैर समुदाय के एक दुकानदार ने दरिंदगी की। आरोपी दानिश पुत्र अब्दुल करीम ने बच्ची को अपनी परचून की दुकान में खींच लिया और उसके साथ दुष्कर्म किया। घटना 18 फरवरी की सुबह की है। पीड़िता अपने स्कूल में पढ़ने जा रही थी। रास्ते में खुशहालगढ़ रोड पर स्थित परचून की दुकान के मालिक दानिश ने उसे जबरन दुकान के अंदर खींच लिया। आरोपी ने न केवल बच्ची के कपड़े फाड़े बल्कि उसके साथ रेप भी किया। उसने बच्ची को जान से मारने की धमकी भी दी।पीड़िता के चिल्लाने की आवाज सुनकर स्कूल प्रबंधक और स्थानीय निवासी सहित कई लोग मौके पर पहुंचे। उन्होंने बच्ची को आरोपी के चंगुल से छुड़ाया। इस दौरान आरोपी की मां रुकसाना ने धमकी दी कि अगली बार बच्ची को उठा ले जाएंगे। घटना की जानकारी मिलते ही सैकड़ों बजरंग दल कार्यकर्ता कोतवाली पर पहुंच गए। उन्होंने सड़क जाम कर प्रदर्शन किया और आरोपी के घर पर बुलडोजर चलाने की मांग की। कोतवाली प्रभारी विशंभर दयाल के अनुसार, पीड़िता के परिजनों की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है।

बहराइच 28 फरवरी को होगा सांसद खेल महाकुम्भ का शुभारम्भ

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा

बहराइच 18 फरवरी। जनपद में सांसद खेल महाकुम्भ के सफल आयोजन हेतु सोमवार को देर शाम देर शाम विकास भवन सभागार में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए सांसद बहराइच डॉ. आनन्द कुमार गोंड ने कहा कि सांसद खेल स्पर्धा योजना का मुख्य उद्देश्य है कि ग्राम, ब्लाक व तहसील स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन कर युवाओं को खेल के प्रति उत्साहित किया जाय। उन्होंने कहा कि ग्रामीण परिवेश में मेधा की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता इस बात की है कि छिपी हुई मेधा को पहचान कर उसे तराशा जाय।

सांसद डॉ. गोंड ने कहा कि ग्रामीण परिवेश में छिपी हुई मेधा को पहचानने में सांसद खेल स्पर्धा योजना मील का पत्थर साबित होगी। सांसद ने सम्बन्धित अधिकारियों से अपेक्षा की शासन की मंशानुरूप सांसद खेल स्पर्धा का प्रत्येक स्तर पर सफलतापूर्वक आयोजित करें ताकि योजना के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके। सांसद डॉ. गोंड ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया कि आयोजन स्थलों पर प्रतिभागियों के लिए माकूल बन्दोबस्त किये जायें जिससे सभी खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का खुलकर प्रदर्शन कर सकें। उन्होंने कहा कि सभी का यह प्रयास होना चाहिए सांसद खेल महाकुम्भ ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को प्रेरित करने में सफल हो। सांसद डॉ. गोंड ने निर्देश दिया कि तहसील एवं जिला स्तर पर आयोजित होने वाली खेल प्रतियोगिताओं में आयोजन स्थल पर साफ-सफाई, पेयजल, शौचालय, एम्बुलेन्स के साथ मेडिकल टीम, सुरक्षा एवं यातायात इत्यादि के उचित प्रबन्ध किये जायें। प्रतियोगिताओं के उद्घाटन हेतु क्षेत्रीय सांसद,

विधायक, उप जिलाधिकारी एवं ब्लाक प्रमुख सहित अन्य जनप्रतिनिधियों तथा क्षेत्रीय गणमान्य व संभ्रान्तजन को आमंत्रित किया जाये ताकि खिलाड़ियों की हौसला अफजाई हो सके। सांसद खेल महाकुम्भ के सफल आयोजन हेतु विभिन्न स्तर पर गठित होने वाली समितियों के सम्बन्ध में सांसद ने कहा कि पूर्व वर्षों में गठित समिति के अनुरूप इस वर्ष भी समितियों का गठन कर लिया जाय।

बैठक में तहसील स्तरीय प्रतियोगिता आयोजन के सम्बन्ध में निर्णय लिया गया कि तहसील मिहींपुरवा अन्तर्गत ब्लाक मिहींपुरवा एवं बलहा के लिए 29 फरवरी 2025 को एस.पी.डी. कालेज सेमरहना, तहसील महसी अन्तर्गत के ब्लाक तेजवापुर व महसी के लिए 01 मार्च 2025 को ब्लाक मुख्यालय तेजवापुर बेड़ना़पुर तथा तहसील नानपारा अन्तर्गत ब्लाक बलहा, नवाबगंज व शिवपुर के लिए 02 मार्च 2025 को सआदत इण्टर कालेज नानपारा में तहसील स्तरीय में प्रतियोगिताएं आयोजित होगी। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 07 व 08 मार्च 2025 को इन्दिरा गांधी स्पोर्ट्स स्टेडियम, बहराइच लोकसभा क्षेत्र अन्तर्गत जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित होगी जिसमें तहसील मिहीपुरवा, महसी व नानपारा के विजेता खिलाड़ी व टीमें प्रतिभाग करेंगी।

बैठक में निर्णय लिया गया कि सांसद खेल महाकुम्भ में बालक व बालिका वर्ग हेतु 100मी., 200मी., 400मी. व 800मी. की दौड़, खो-खो, कबड्डी और वालीबाल की प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। प्रतियोगिता में 01 जनवरी 2011 के बाद जन्मे खिलाड़ी प्रतिभाग कर सकेंगे। खिलाड़ियों का पंजीकरण सम्बन्धित खण्ड शिक्षा अधिकारी के स्तर पर होगा। जिला स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में प्रत्येक तहसील से एथलेटिक्स खेल में 10-10 बालक-बालिकाएं तथा वालीबाल, खो-खो व कबड्डी खेल में 10-10 खिलाड़ियों की दो टीमें बालक व बालिकाओं की टीमें प्रतिभाग करेंगी।

मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया सांसद खेल महाकुम्भ के सफल आयोजन हेतु बेहतर से बेहतर प्रबन्ध सुनिश्चित करें ताकि प्रतियोगिता में शामिल होने वाले बच्चों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। बैठक के अन्त में क्रीड़ाधिकारी आनन्द कुमार श्रीवास्तव द्वारा सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी देवेन्द्र पाल सिंह, जिला विकास अधिकारी राज कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी नरेन्द्र तिवारी सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉर्डनाइजेशन:अनूपशहर समेत यूपी के 10 नगर निकायों में नक्शा कार्यक्रम शुरू, संपत्ति विवाद होंगे कम

पोषित कुमार(आज का मुद्दा)

अनूपशहर नगर पालिका परिषद में डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉर्डनाइजेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का ऑनलाइन प्रसारण एलडीए वीइंटर कॉलेज में हुआ।केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश के रायसेन से इस कार्यक्रम की शुरूआत की। यह कार्यक्रम देश के 23 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों के 152 नगरीय क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में 10 नगर निकायों में इसे लागू किया गया है, जिसमें अनूपशहर भी शामिल है।कार्यक्रम की संयोजक और अधिशासी अधिकारी गार्गी त्यागी ने बताया कि इस कार्यक्रम से नगरीय क्षेत्र के सभी अभिलेखों की डिजिटल मैपिंग होगी। इससे रिकॉर्ड डिजिटल रूप में सुरक्षित रहेंगे। साथ ही संपत्ति विवादों में कमी आएगी और स्वामित्व का पारदर्शी निर्धारण होगा।कार्यक्रम में उपजिलाधिकारी

प्रियंका गोयल मुख्य अतिथि रहीं। नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष बृजेश गोयल ने अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता अखंड प्रताप सिंह ने किया।इस मौके पर सर्वे ऑफ इंडिया के अधिकारी और कर्मचारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि, नगर पालिका के सभासद और सैकड़ों नागरिक मौजूद रहे।

बाइक से बाइक की टक्कर से गिरे दो युवक गिरने पर ट्रेक्टर ट्राली के चपेट में आने दोनों घायल

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद बहराइच आज का मुद्दा रिसिया।

कस्बा रिसिया के दो युवा बाइक सेबच्चो को टिफिन देने जा रहे थे,निजी अस्पताल के निकट सामने से आ रही बाइक से टक्कर हो गई,जिस कारण बाइक से गिरे दोनो लड़के सामने से अचानक पहुंची ट्रेक्टर ट्राली की चपेट में आ गए,और गंभीर रूप से घायल हो गए। थाना रिसिया के देवी पूरा निवासी मिस्बाहुल हक पुत्र जुबेर ,18वर्ष तथा रिश्तेदार,कैफ पुत्र लइक अहमद,17वर्ष के साथ सुबह सवा नौ बजे खाने की टिफिन लेकर बच्चो को देने बाइक से जा रहा था, रिसिया से नरसिंह डीहा मार्ग पर मुस्तफा हास पीटल के निकट सामने से आ रही बाइक ने टक्कर मार दी,जिस कारण ये दोनो युवक सड़क पर उछल कर गिर गए, उसी समय अचानक पहुंची ट्रेक्टर ट्राली के चपेट में आ गए, और ट्रेक्टर के नीचे दब गए,जिससे दोनो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए,कैफ की हालत ज्यादा बिगड़ने पर जिला अस्पताल रेफर किया गया,वहीं से एंबुलेंस के जरिए लखनऊ रेफर कर दिया गया,जबकि मुस्बाहुल हक को भी गंभीर चोटे आई,जिनका इलाज निकट के निजी अस्पताल में चल रहा है। प्रत्यक्ष दर्शी बता रहे हैं कि टैक्टर ट्राली कस्बे के ही निकट गांव में स्थित बिल्डिंग मेटेरियल वाले की हैं, उस टेक्टर ट्राली से मेटेरियल गिराकर वापस रिसिया आ रहा था,तभी यह घटना घटी।पुलिस ने ट्रेक्टर ट्राली सहित बाइक को कब्जे में ले लिया हैं।

चौकी प्रभारी बिहारी सिंह यादव ने बताया है। कि ट्रेक्टर ट्राली सहित बाइक कब्जे में है।अभी तहरीर नहीं मिली है।मिलते ही कार्यवाही की जाएगी।।।।

पेड़ से लटककर मजदूर ने की आत्महत्या

पोषित कुमार(आज का मुद्दा)

अनूपशहर:कोतवाली क्षेत्र के गांव लच्छमपुर में अपनी सुसराल में रह रहे मजदूर रामगोपाल 35साल ने बाग में पेड़ पर फंदे पर लटककर अपनी जान दे दी है। पुलिस व फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंचकर जांच में जुटी हुई है। रामपुर के साहिबाबाद थाना क्षेत्र के भुड़ासी गांव निवासी रामगोपाल पुत्र भगवान पिछले 4 वर्षों से अपनी ससुराल गांव लच्छमपुर में रहकर मजदूरी का काम कर रहा था। मंगलवार दोपहर रामगोपाल का शव बाग में आम के पेड़ पर लटका मिला। जिससे आत्महत्या किये जाने के कयास लगाये जा रहे हैं। आत्महत्या के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। कोतवाली प्रभारी अनूपशहर विशंभर दयाल के अनुसार, फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया गया है। टीम मौके से साक्ष्य एकत्र कर रही है। शव का पंचनामा भरकर कर पोस्टमार्टम को भेज दिया है। जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

कांग्रेस पार्टी को देश की एकता और अखंडता से कोई सरोकार नहीं:मोहनलाल बडौली

महेंद्रगढ़,19 फरवरी।(शशि किरण अरोड़ा) - आज का मुद्दा--कांग्रेस पार्टी के नेता का बयान साबित कर रहा हैं कि उन्हें देश की एकता और अखंडता से कोई सरोकार नहीं है। उक्त बातें हरियाणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडौली ने सोमवार देर सांय पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा के आवास जयराम सदन में कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा पर पलटवार करते हुए कहीं। कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने सोमवार को अपने एक बयान में कहा कि चीन भारत का दुश्मन नहीं है। चीन से भारत को खतरे को अक्सर बड़ा चढ़ा कर पेश किया जाता है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडौली ने कहा कि पित्रोदा के बयान को भारत की पहचान, संप्रभुता और कूटनीति को गहरा आघात लगा है कांगेस नेता पहले भी देश के खिलाफ विवादित बयान देते रहे है। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि हरियाणा में हो रहे निकाय चुनावों में भाजपा का कमल खिलेगा और ट्रिपल इंजन की सरकार बनेगी। निकाय चुनांव में नामांकन का काम पूरा हो चुका है। नगर निकाय चुनाव में कांग्रेस का अब तक का सबसे अधिक खराब प्रदर्शन रहेगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने सदा ही झूठ और फरेब की राजनीति की है। हरियाणा के साथ-साथ देश की जनता कांग्रेस की असलियत को जान चुकी है। उन्होंने कहा कि पूर्व शिक्षा मंत्री रामबिलास शर्मा से मिलने से हमारी बैटरी चार्ज हो जाती है। रामबिलास शर्मा पार्टी के हरियाणा के ऐसे वरिष्ठ नेता है जिनके नेतृत्व में हर कार्यकार्ता ने काम करके बीजेपी को मजबूत करने का कार्य किया है। इस मौके पर पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व शिक्षा मंत्री प्रोफेसर रामबिलास शर्मा ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल ही में अमेरिका यात्रा बेहद सफल रही अमेरिका ने भी भारत के लोहे को मान लिया है। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने बांग्लादेश विवाद में यह कहकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ताकत का एहसास कर दिया है कि बांग्लादेश

विवाद को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही बेहतर समझ सकते हैं। चुनाव परिणाम की जानकारी की भविष्यवाणी में माहिर जाने वाले पूर्व शिक्षा मंत्री रामबिलास शर्मा ने एक बार फिर दावा किया कि निकाय चुनावों में भाजपा प्रचंड बहुमत से जीत हासिल करेगी। उन्होंने कहा कि निकाय चुनाव में जनता कमल का फूल खिलाएगी और अपने क्षेत्र के नॉनस्टॉप विकास के लिए ट्रिपल इंजन की सरकार बनाने का कार्य करेगी। अपने आवास पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडौली का पहुंचने पर गुलदस्ता भेंट कर एवं पगड़ी पहनकर कार्यकताओं के साथ प्रोफेसर रामबिलास शर्मा ने गर्म जोशी से स्वागत किया। इस मौके पर वरिष्ठ भाजपा नेता कुलदीप यादव बोचड़िया,युवा भाजपा नेता नवीन शर्मा राठीवास, ब्लॉक समिति चेयरमैन विजयलक्ष्मी, जिला पार्षद देवेंद्र यादव, भीम यादव पूर्व सरपंच माजरा खुर्द, अमित भारद्वाज पाली, रमेश शर्मा जाटवास, नगर पालिका के पूर्व चेयरमैन रमेश बोहरा,धर्मेंद्र सैनी, अजय मोनू शेखावत, अजय शर्मा खेडकी, अमित मिश्रा, कुलदीप शर्मा, विवेक खैरवाल, दिनेश यादव सहित भारी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।

बहराइच 29 फरवरी को होगा सांसद खेल महाकुम्भ का शुभारम्भ

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा-बहराइच 18 फरवरी। जनपद में "सांसद खेल महाकुम्भ" के सफल आयोजन हेतु सोमवार को देर शाम देर शाम विकास भवन सभागार में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए सांसद बहराइच डॉ. आनन्द कुमार गोंड ने कहा कि "सांसद खेल स्पर्धा योजना" का मुख्य उद्देश्य है कि ग्राम, ब्लाक व तहसील स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन कर युवाओं को खेल के प्रति उत्साहित किया जाय। उन्होंने कहा कि ग्रामीण परिवेश में मेधा की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता इस बात की है कि छिपी हुई मेधा को पहचान कर उसे तराशा जाय। सांसद डॉ. गोंड ने कहा कि ग्रामीण परिवेश में छिपी हुई मेधा को पहचानने में सांसद खेल स्पर्धा योजना मील का पत्थर साबित होगी। सांसद ने सम्बन्धित अधिकारियों से अपेक्षा की शासन की मंशानुरूप सांसद खेल स्पर्धा का प्रत्येक स्तर पर सफलतापूर्वक आयोजित करें ताकि योजना के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके। सांसद डॉ. गोंड ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया कि आयोजन स्थलों पर प्रतिभागियों के लिए माकूल बन्दोबस्त किये जायें जिससे सभी खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का खुलकर प्रदर्शन कर सकें। उन्होंने कहा कि सभी का यह प्रयास होना चाहिए सांसद खेल महाकुम्भ ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को प्रेरित करने में सफल हो। सांसद डॉ. गोंड ने निर्देश दिया कि तहसील एवं जिला स्तर पर आयोजित होने वाली खेल प्रतियोगिताओं में आयोजन स्थल पर साफ-सफाई, पेयजल, शौचालय, एम्बुलेन्स के साथ मेडिकल टीम, सुरक्षा एवं यातायात इत्यादि के उचित प्रबन्ध किये जायें। प्रतियोगिताओं के उद्घाटन हेतु क्षेत्रीय सांसद,

विधायक, उप जिलाधिकारी एवं ब्लाक प्रमुख सहित अन्य जनप्रतिनिधियों तथा क्षेत्रीय गणमान्य व संभ्रान्तजन को आमंत्रित किया जाये ताकि खिलाड़ियों की हौसला अफजाई हो सके। सांसद खेल महाकुम्भ के सफल आयोजन हेतु विभिन्न स्तर पर गठित होने वाली समितियों के सम्बन्ध में सांसद ने कहा कि पूर्व वर्षों में गठित समिति के अनुरूप इस वर्ष भी समितियों का गठन कर लिया जाय। बैठक में तहसील स्तरीय प्रतियोगिता आयोजन के सम्बन्ध में निर्णय लिया गया कि तहसील मिहींपुरवा अन्तर्गत ब्लाक मिहींपुरवा एवं बलहा के लिए 29 फरवरी 2025 को एस.पी.डी. कालेज सेमरहना, तहसील महसी अन्तर्गत के ब्लाक तेजवापुर व महसी के लिए 01 मार्च 2025 को ब्लाक मुख्यालय तेजवापुर बेड़ना़पुर तथा तहसील नानपारा अन्तर्गत ब्लाक बलहा, नवाबगंज व शिवपुर के लिए 02 मार्च 2025 को सआदत इण्टर कालेज नानपारा में तहसील स्तरीय में प्रतियोगिताएं आयोजित होगी। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 07 व 08 मार्च 2025 को इन्दिरा गांधी स्पोर्ट्स स्टेडियम, बहराइच लोकसभा क्षेत्र अन्तर्गत जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित होगी जिसमें तहसील मिहीपुरवा, महसी व नानपारा के विजेता खिलाड़ी व टीमें प्रतिभाग करेंगी। बैठक में निर्णय लिया गया कि सांसद खेल महाकुम्भ में बालक व बालिका वर्ग हेतु 100मी., 200मी., 400मी. व 800मी. की दौड़, खो-खो, कबड्डी और वालीबाल की प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। प्रतियोगिता में 01 जनवरी 2011 के बाद जन्मे खिलाड़ी प्रतिभाग कर सकेंगे। खिलाड़ियों का पंजीकरण सम्बन्धित खण्ड शिक्षा अधिकारी के स्तर पर होगा। जिला स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में प्रत्येक तहसील से एथलेटिक्स खेल में 10-10 बालक-बालिकाएं तथा वालीबाल, खो-खो व कबड्डी खेल में 10-10 खिलाड़ियों की दो टीमें बालक व बालिकाओं की टीमें प्रतिभाग करेंगी। मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया सांसद खेल महाकुम्भ के सफल आयोजन हेतु बेहतर से बेहतर प्रबन्ध सुनिश्चित करें ताकि प्रतियोगिता में शामिल होने वाले बच्चों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। बैठक के अन्त में क्रीड़ाधिकारी आनन्द कुमार श्रीवास्तव द्वारा सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी देवेन्द्र पाल सिंह, जिला विकास अधिकारी राज कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी नरेन्द्र तिवारी सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

सूखे कचरे को अलग- अलग करने की समस्या दूर होगी

आज का मुद्दा नोएडा। सूखे कचरे से प्लास्टिक, पॉलीथिन और कागज को अलग कर पुनः उपयोग में लाने के लिए पुनर्चक्रण (रिसाइकिल) किया जाएगा। इसके लिए औद्योगिक सेक्टर इकोटेक-12 में मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी सेंटर (एमआरएफसी) स्थापित किया जाएगा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण और पर्यावरण और शिक्षा केंद्र के बीच समझौता हो चुका है। इस सेंटर की क्षमता पांच टीपीडी (टन प्रतिदिन) होगी। इससे कूड़ा निस्तारण की समस्या का कुछ हद तक समाधान हो जाएगा। भविष्य में इस तरह के और संयंत्र स्थापित किए जाएंगे।

ग्रेटर नोएडा को स्वच्छता के मामले में अव्वल बनाने के लिए प्राधिकरण ने शत प्रतिशत कूड़े के निस्तारण की योजना बनाई है। घरेलू कूड़े को अलग करके क्या-क्या उत्पाद बनाए जा सकते हैं। इसके लिए पूर्व में रुचि की अभिव्यक्ति जारी कर इच्छुक कंपनियों को आमंत्रित किया गया था। कूड़ा निस्तारण केंद्र तक कम से कम कूड़ा पहुंचे इस पहल पर काम शुरू कर दिया गया है। इसके तहत एमआरएफसी स्थापित किया जाएगा। अधिकारी के मुताबिक एमआरएफसी पर उन्नत तकनीक के जरिए प्लास्टिक, पॉलीथिन, रबड़, कागज आदि सूखे कचरे को अलग-अलग किया जाएगा। घरों से निकलने वाला सूखा कचरा केंद्र तक पहुंचाने की जिम्मेदारी प्राधिकरण की होगी। प्लास्टिक और पॉलीथिन को रिसाइकिल कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर चिप

बनाई जाएगी। वहीं कागज को रिसाइकिल कर गत्ता बनाया जाएगा। रिसाइकिल के बाद तैयार चिप (प्लास्टिक के टुकड़े) और गत्ता उन कंपनियों को बेचा जाएगा, जो बेकार चीजों से उपयोगी वस्तुएं बनाने का काम करती हैं। इससे संस्था कमाई करेगी। प्राधिकरण की योजना शहर में इस तरह के और सेंटर स्थापित करने की है, ताकि कूड़ा निस्तारण केंद्र तक कम से कम कूड़ा पहुंचे। दूसरा इसका एक और फायदा यह भी होगा कि सूखा और गीला कचरा अलग-अलग पहुंचेगा। सेंटर स्थापित करने के साथ लोगों को जागरूक भी किया जाएगा कि घर में ही सूखे व गीले कचरे को अलग-अलग रखा जाए। इससे निस्तारण में आसानी होगी।

कबाड़ का कारोबार करने वाले लोगों को जोड़ा जाएगा

संस्था के प्रतिनिधि रोहित मसकारा के मुताबिक इस केंद्र से कबाड़ का कारोबार करने वाले लोगों को भी जोड़ा जाएगा। उनके द्वारा एकत्रित किए गए प्लास्टिक, पेपर आदि को खरीदकर रिसाइकिल किया जाएगा।

जागरुकता कार्यक्रम चलाए जाएंगे

इस पहल को सफल बनाने के लिए लोगों को सूखा और गीला कचरा अलग-अलग रखने के लिए जागरूक किया जाएगा। संस्था द्वारा आवासीय सेक्टरों के साथ स्कूल, कॉलेजों में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

सूखे कचरे से प्लास्टिक, पॉलीथिन और कागज को अलग करने के लिए मैटेरियल रिकवरी फैसिलिटी सेंटर स्थापित किया जाएगा। इसको लेकर पर्यावरण और शिक्षा केंद्र नामक संस्था के साथ समझौता किया गया है। सूखे और गीले सहित सभी तरह के कचरे के निस्तारण की योजना बनाई गई है। इस पर काम शुरू कर दिया गया है।

आईएएस एवं पीसीएस 2024 की मुख्य परीक्षा पास करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत मॉक साक्षरता का किया जा रहा है आयोजन

आज का मुद्दा-गौतम बुद्ध नगर : जिला समाज कल्याण अधिकारी सतीश कुमार ने संघ लोक सेवा आयोग एवं राज्य लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षा में उत्तीर्ण प्रतियोगी छात्र-छात्राओं को जानकारी देते हुए बताया कि आईएएस एवं पीसीएस 2024 की मुख्य परीक्षा पास करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए मुख्यमंत्री अभ्युदय योजनान्तर्गत जनपद गौतमबुद्धनगर के सेक्टर 37, नोएडा स्थित डा० भीमराव आम्बेडकर पुस्तकालय सेक्टर 37, नोएडा में मॉक साक्षात्कार का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मॉक साक्षात्कार हेतु जो भी प्रतियोगी छात्र-छात्रा आवेदन करना चाहते है वो दिपांशु सिंह कोर्स को-आर्डिनेटर मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना गौतमबुद्धनगर के मोबाईल नम्बर 8800770498 व सारांश श्रीवास्तव वरिष्ठ सहायक समाज कल्याण के मोबाइल नम्बर 8860517148 तथा सेक्टर 37 नोएडा स्थित डा० भीमराव आम्बेडकर पुस्तकालय अभ्युदय योजना केन्द्र में दिनांक 22.02. 2025 तक सम्पर्क कर सकते है।

एनटीपीसी दादरी का ग्रामीण शिक्षा और विकास को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प

आज का मुद्दा-गौतमबुद्धनगर : एनटीपीसी दादरी द्वारा दिनांक 17 फरवरी 2025 को नैगम सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण अनुदान हस्तांतरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री के.सी. मुरलीधरन, मुख्य महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी दादरी ने श्री मनीष कुमार वर्मा, जिलाधिकारी झ गौतम बुद्ध नगर को समीपवर्ती गांवों के विकास कार्यों हेतु अनुमोदित धनराशी ₹2,74,11,340 के मद में प्रथम किस्त का चेक सौंपा। यह अनुदान रानोली लतीफपुर, जैतवारपुर, ऊँचा आमीरपुर, रसूलपुर डासना, पियावली-ताजपुर, बदपुरा, जारचा, मुंथियानी और सिदीपुर गाँवों के विकास कार्यों हेतु प्रदान किया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधानगण एवं ग्राम सचिव भी उपस्थित रहे। समारोह में जिले के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, जिनमें श्री विद्यानाथ शुक्ला (मुख्य विकास अधिकारी), श्री मंगलेश दुबे (अपर जिला अधिकारी), श्री राहुल पवार (बेसिक शिक्षा अधिकारी), एवं श्री शशि भूषण (अधिशासी अभियंता - ग्रामीण अभियंत्रण विभाग) भी उपस्थित रहे। साथ ही, एनटीपीसी दादरी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस महत्वपूर्ण अवसर पर मौजूद रहे। इस अनुदान हस्तांतरण के पश्चात, एनटीपीसी दादरी द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय, रसूलपुर डासना में नव निर्मित कक्षा-कक्षों एवं विद्यालय के जीर्णोद्धार कार्य का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम में श्री मनीष कुमार वर्मा, जिलाधिकारी झ गौतम बुद्ध नगर एवं श्री के.सी. मुरलीधरन, मुख्य महाप्रबंधक, एनटीपीसी दादरी उपस्थित रहे व उन्होंने नवीन उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करने और शिक्षा के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस पहल से ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा वातावरण प्राप्त होगा। विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने इस पहल की सराहना की और एनटीपीसी दादरी का आभार व्यक्त किया। एनटीपीसी दादरी सतत विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के विकास में योगदान देता रहा है। एनटीपीसी स्थानीय सरकारी विद्यालयों को मॉडल स्कूलों में परिवर्तित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है, जिससे क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता और शैक्षिक संस्थानों का स्तर ऊँचा उठाया जा सके। यह प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे स्थानीय समुदाय को सशक्त बनाने में सहायता मिलेगी।

पंचायत उप निर्वाचन 2025 के अंतर्गत ग्राम पंचायत शमशमनगर में मतदान हेतु विकास भवन से पोलिंग पार्टी हुई रवाना

19 फरवरी 2025 को होगा मतदान एवं 21 फरवरी 2025 को होगी मतगणना

आज का मुद्दा-गौतम बुद्ध नगर 18 फरवरी 2025 जिला निर्वाचन अधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट मनीष कुमार वर्मा ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा निर्गत अधिसूचना में उल्लेखित कार्यक्रम अनुसार पंचायत उप निर्वाचन फरवरी 2025 के अंतर्गत विकासखंड जेवर की ग्राम पंचायत शमशमनगर में ग्राम प्रधान पद हेतु 19 फरवरी 2025 को मतदान किया जाएगा, जिसके लिए आज सूरजपुर स्थित विकास भवन से मतदान दलों की रवानगी की गई। पंचायत उप निर्वाचन फरवरी-2025 के तहत ग्राम पंचायत शमशमनगर में प्रधान पद हेतु निर्वाचन के लिए 01 मतदान केंद्र एवं 02 मतदेत स्थल बनाए गए हैं। उन्होंने बताया कि मतगणना 21 फरवरी 2025 को विकासखंड जेवर मुख्यालय पर होगी।

उन्होंने बताया कि मतदान दलों को रवानगी से पूर्व सामग्री का वितरण किया गया। मतदान दल में

जिला कृषि अधिकारी/रिटर्निंग ऑफिसर विनोद कुमार, सहायक विकास अधिकारी सहकारिता/सहायक रिटर्निंग ऑफिसर आलोक रंजन, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी राकेश शर्मा एवं अन्य संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।

पत्रकारों का महाकुंभ 23 फरवरी को प्रयागराज में - नंद गोपाल वर्मा

आज का मुद्दा-नोएडा : प्रयागराज में 23 फरवरी को पत्रकारों का महाकुंभ भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के सानिध्य में देशभर से आने वाले पत्रकार प्रयागराज में आकर संगम में आस्था की डुबकी लगा कर सनातन के प्रति श्रद्धा समर्पण और मानवता का संदेश देंगे। इस अवसर पर परेड मैदान में पत्रकार मंगल मिलन आयोजन भी होगा। उक्त जानकारी भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के सचिव पत्रकार व सामाजिक नंद गोपाल वर्मा ने देते हुए बताया कि पत्रकार महासंघ के रजत जयंती वर्ष में 23 फरवरी रविवार को

प्रयागराज परेड ग्राउंड में होने जा रहे पत्रकारों के महाकुंभ में देश भर के तमाम प्रति से काफी संख्या में विभिन्न न्यूज चैनलों प्रिंट इलेक्ट्रानिक मीडिया कर्मी पत्रकार व साहित्यकार प्रयागराज पहुंच कर महा कुंभ की आभा से अभिभूत होंगे। श्री वर्मा ने आगे बताया कि पत्रकारों का महाकुंभ संगठन के राष्ट्रीय संरक्षक एडवोकेट व पत्रकार डॉ बालकृष्ण पांडे, राष्ट्रीय संयोजक डॉ भगवान प्रसाद उपाध्याय, राष्ट्रीय अध्यक्ष मुनेश्वर मिश्र, मुख्य महासचिव मथुरा प्रसाद धूरिया, राष्ट्रीय सचिव नंद गोपाल वर्मा के सानिध्य में संपन्न होगा। गौतमबुद्ध नगर जिले से संगठन के प्रदेश सचिव पत्रकार राजेश शर्मा के नेतृत्व में लीला शर्मा, तरुण शर्मा, पूजा शर्मा, शिवा वर्मा समेत पत्रकारों का बड़ा समूह गौतम बुद्ध नगर से 22 फरवरी को प्रयागराज पत्रकारों के महाकुंभ में शामिल होने के लिए रवाना होगा।

गौतमबुद्ध नगर यूनिवर्सिटी में चोरी, केस दर्ज

आज का मुद्दा-नोएडा। ग्रेटर नोएडा स्थित गौतमबुद्ध यूनिवर्सिटी में एक गंभीर मामला सामने आया है, जहां यूनिवर्सिटी के गोपनीय दस्तावेजों की चोरी कर उन्हें संस्थान के सभी प्रोफेसर्स और कर्मचारियों को ईमेल कर दिया गया। विधि विभाग के अध्यक्ष डॉ. संतोष कुमार तिवारी की शिकायत पर ईकोटेक-1 कोतवाली में मामला दर्ज किया गया है। यूनिवर्सिटी की स्थापना विभाग में रखे गए गोपनीय दस्तावेज, जो एक विशेष अधिकारी की देखरेख में थे, को चुराने के बाद आरोपी ने एक नई ईमेल आईडी बनाकर उन्हें यूनिवर्सिटी के समस्त कर्मचारियों को भेज दिया। मामले में योगेश नाम के एक व्यक्ति और कुछ अज्ञात कर्मचारियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।कोतवाली प्रभारी ईकोटेक-1 अरविंद वर्मा ने बताया कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया गया है और जल्द ही जांच पूरी कर आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।यह घटना यूनिवर्सिटी की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है, क्योंकि गोपनीय दस्तावेजों तक किसी की भी पहुंच होना चिंता का विषय है।

क्रिकेट मैच के दौरान युवक की हत्या,तीन आरोपी गिरफ्तार

धीरेन्द्र अवाना ग्रेटर नोएडा। गौतमबुद्ध नगर के सूरजपुर में उस वक्त सनसनी मच गयी जब क्रिकेट मैच के दौरान हुए विवाद में एक युवक की हत्या कर दी गयी।मृतक की पहचान सूरजपुर निवासी मनीष कुमार शर्मा (32) के रुप में हुई है।आपको बता दे कि ग्रेटर नोएडा के सूरजपुर कस्बे के मैदान में कुछ लोग क्रिकेट खेल रहे थे।इस दौरान मनीष नामक युवक का क्रिकेट खेल रहे कुछ युवकों से विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि आरोपियों ने क्रिकेट बैट से हमला कर मनीष की हत्या कर दी।इसके बाद सभी आरोपी मौके से फरार हो गए।मौके पर पहुंची सूरजपुर थाना पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।घटनास्थल पर पहुंच कर फोरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए। डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है। पुलिस ने तीन आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।स्थानीय लोगों में आक्रोश है।उन्होंने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी और कड़ी सजा की मांग की है।पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया है। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद मृतक के परिजन व अन्य लोग सूरजपुर थाने पहुंच गए और उन्होंने आरोपियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी की मांग की।

गुरुकुल और गोशाला सील, 35 लड़कियों को किया गया शिफ्ट

आज का मुद्दा-नोएडा। सेक्टर-115 सोरखा गांव में बिना मान्यता के चल रहे आर्य कन्या गुरुकुल और गौ शाला को शिक्षा विभाग ने सील कर दिया है। यहां रह रही लड़कियों को अभी सेक्टर-44 के महामाया बालिका इंटर कॉलेज में रखा गया है। इनके पेरेंट्स से संपर्क किया जा रहा है। ऐसे में अगर पेरेंट्स इनको महामाया बालिका इंटर कॉलेज में पढ़ाना चाहते है तो दाखिला कराया जाएगा। इस दौरान भारी पुलिस बल मौजूद रहा। आसपास के लोगों ने बिना मान्यता के चल रहे इस गुरुकुल की शिकायत प्रशासन से की थी। यहां आर्य कन्या गुरुकुल वेदधाम और श्री कृष्ण गोशाला संचालित हो रही थी। ये सरकारी जमीन पर बना हुआ था। यहां करीब 50 लड़कियां रहकर पढ़ाई कर रही थी। जिसमें से 15 पहले चली गई थी। ये सभी अलग-अलग राज्यों की रहने वाली है। गुरुकुल में गोशाला भी थी जिसे भी सील किया गया।

शिकायत मिलने पर जारी किया था नोटिस

इससे पहले भी गुरुकुल पर कार्रवाई करते हुए नोटिस जारी किया गया था। डीआई ओएस ने इस मामले में शिकायत मिलने पर कार्रवाई की थी। उस दौरान करीब 47 छात्राएं यहां रहकर पढ़ाई कर रही थी। पिछले 14 साल से इसे संचालित किया जा रहा था। इसके बाद भी गुरुकुल प्रबंधक ने मान्यता के लिए अप्लाई नहीं किया। गुरुकुल के लिए अनिवार्य है कि वह उप्र माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद से मान्यता ले।

निमार्णाधीन फैक्ट्री की तीसरी मंजिल से गिरकर मजदूर की मौत

आज का मुद्दा-नोएडा। थाना फेज-2 क्षेत्र मे स्थित एक निमार्णाधीन फैक्ट्री में काम करते समय एक मजदूर की तीसरी मंजिल से गिरकर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।थाना प्रभारी निरीक्षक विंध्याचल तिवारी ने बताया कि दिल्ली के शाहीन बाग स्थित अबुल फजल एंकलेव पार्ट-दो निवासी मोहम्मद इमरान मजदूरी करते थे। वह मूलरूप से जिला गाजियाबाद के गांव कुशलिया के रहने वाले थे। फेज-2 क्षेत्र के सेक्टर-80 स्थित डी ब्लॉक के छह नंबर भूखंड मे फैक्ट्री का निर्माण का काम चल रहा है। इस फैक्ट्री में वह पिछले कई दिन से मजदूरी का काम कर रहे थे। वह तीसरी मंजिल पर काम कर रहे थे। इसी दौरान संतुलन बिगड़ने के चलते वह नीचे आ गिरे। वहां काम कर रहे अन्य मजदूरों ने लहूलुहान अवस्था में अस्पताल पहुंचाया। जहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। अस्पताल की ओर से पुलिस को सूचना मिली। मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के परिजन को सूचना दी। उन्होंने बताया कि इस मामले में अभी तक परिजनों ने कोई शिकायत नहीं की है।

खुदाई के समय नींव की मिट्टी गिरने से एक श्रमिक की मौत

आज का मुद्दा-नोएडा। थाना सेक्टर 49 क्षेत्र के सलारपुर गांव स्थित सेक्टर-101 मेट्रो स्टेशन के पास बेसमेंट की खोदाई करते समय मिट्टी की दीवार गिर गई। इसमें में दबने से एक मजदूर की मौत हो गई। मजदूर के साथी उपचार के लिए उसे अस्पताल लेकर पहुंचे लेकिन तब-तक उसकी मौत हो चुकी थी।स्थानीय लोगों का कहना है कि मृतक मजदूर के परिवार वाले करीब तीस लोगों के साथ थाने पहुंचे और खोदाई कराने वाले व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। थाना सेक्टर 49 के प्रभारी निरीक्षक अनुज कुमार सैनी ने बताया कि घटनास्थल पर मौजूद एक व्यक्ति ने पूछताछ में बताया कि वह जनपद संभल के गांव बघूरा कटियाखेड़ा का रहने वाला है। उसके गांव का 27 वर्षीय रूप किशोर नोएडा के छलेरा गांव में किराये का कमरा लेकर रह रहा था। रूप किशोर शादीशुदा था और बेलदारी का काम कर परिवार का भरण पोषण करता था। रूप किशोर सोमवार को ब्रजपाल और रामकिशन के साथ सलारपुर में 101 मेट्रो स्टेशन के पास बेसमेंट की खोदाई का काम करने गया था। तीनों मिलकर खोदाई और मिट्टी हटाने का काम कर रहे थे। इसी दौरान मिट्टी की दिवार गिरने से रूप किशोर मिट्टी मे दब गया और दम घुटने से उसकी मौत हो गई। ब्रजपाल और रामकिशन के मामूली चोट आई। दोनों को प्राथमिक उपचार के बाद भेज दिया गया। अब दोनों की हालत एकदम ठीक बताई जा रही है। आरोप है कि काम कराने वाला मालिक मना करने पर भी गहराई में खोदाई करा रहा था। थाना प्रभारी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच कराई जा रही है। शिकायत मिलने पर मुकदमा दर्ज किया जाएगा। मृतक के परिजनों को भी घटना की पूरी जानकारी दे दी गई है।

शादी समारोह में पड़ोसी ने की मारपीट, गोली मारने की दी धमकी

नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट निवासी एक व्यक्ति ने थाना फेज-दो क्षेत्र स्थित एक सोसाइटी में रहने वाले व्यक्ति के खिलाफ मारपीट करने और गोली मारकर हत्या करने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर-एक निवासी दीपक कुमार दूबे ने पुलिस को बताया कि उनकी सोसाइटी के एक व्यक्ति के घर में शादी समारोह था। शादी का कार्यक्रम सेक्टर-93बी स्थित बारात घर में था। वह 16 फरवरी को शादी समारोह में शामिल होने पहुंचे थे। आरोप है कि वहां पर सोसाइटी में रहने वाला रज्जन तिवारी नशे में था। रात करीब दस बजे बारातघर में ही अभद्रता करनी शुरू कर दी। इसका विरोध करने पर आरोपी ने मारपीट की और गोली मारने की धमकी दी।

आईएमएस में ओपन वॉलीबॉल टूनार्मेंट का आयोजन

आज का मुद्दा-नोएडा। इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) नोएडा में इंटरा कॉलेज वॉलीबॉल टूनार्मेंट का आयोजन हुआ। सेक्टर 62 स्थित संस्थान परिसर में आयोजित इस 3 दिवसीय कार्यक्रम के पहले दिन 18 टीम ने हिस्सा लिया। वहीं कार्यक्रम के दौरान अंतरराष्ट्रीय वॉलीबॉल प्लेयर रोहित राणा, आईएमएस के वाइस प्रेसिडेंट चिराग गुप्ता, महानिदेशक प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन, स्पोर्ट्स कॉडिनेटर रीना मैसी के साथ संस्थान के शिक्षक एवं छात्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए चिराग गुप्ता ने कहा कि खेलकूद छात्र जीवन का अहम हिस्सा है। यह शारीरिक तंदरुस्ती को बढ़ावा देने के साथ-साथ छात्रों में टीम वर्क एवं कुशल नेतृत्व क्षमता को भी विकसित करता है। प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्होंने छात्रों को खेल भावना के साथ

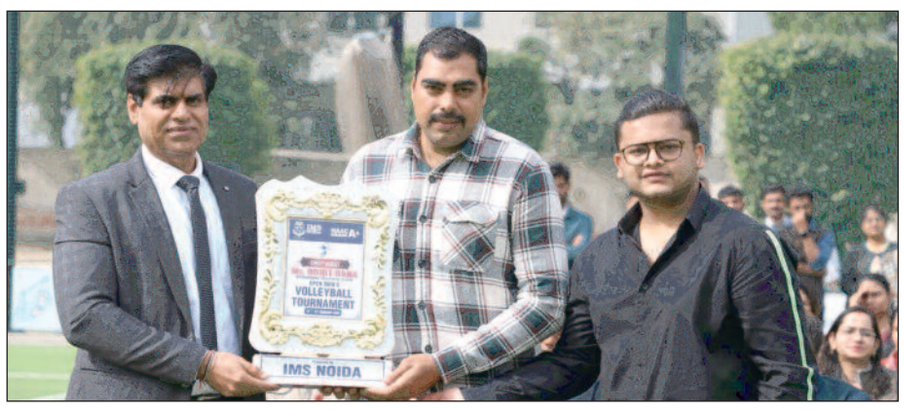

मैच खेलने के लिए प्रेरित किया। वहीं आईएमएस नोएडा के महानिदेशक प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन ने कहा कि खेल छात्रों के संपूर्ण विकास में सहायक होते हैं। छात्र पढ़ाई के साथ-साथ खेल की बारीकियां एवं खेल-कूद में करियर की संभावनाओं को भी ध्यान में रखते हुए अपनी तैयारी कर सकते हैं।कार्यक्रम के दौरान रोहित राणा ने छात्रों को उत्साहित करते हुए कहा कि खेल में अनुशासन और निरंतर अभ्यास सफलता की कुंजी है। एक अच्छे खिलाड़ी को मानसिक और शारीरिक रूप से फिट रहने के लिए नियमित अभ्यास और स्वस्थ जीवनशैली अपनानी चाहिए। उन्होंने छात्रों को वॉलीबॉल के तकनीकी पहलुओं और खेल में करियर बनाने के अवसरों के बारे में जानकारी दी।वहीं आईएमएस की स्पोर्ट्स कॉडिनेटर रीना मैसी ने बताया कि इस 3 दिवसीय वॉलीबॉल टूनार्मेंट में दिल्ली एनसीआर के 32 टीम हिस्सा ले रहे हैं। मंगलवार को कार्यक्रम के पहले दिन 18 टीम ने फस्ट राउंड खेला, जिसमें आईएमएस नोएडा की टीम ने नोएडा क्लब को, एमएच पब्लिक स्कूल ने जेएसबी एकेडमी को, एकेजी कॉलेज ने शैडो क्लब को,एसवीएम स्कूल ने बाल भारती स्कूल को एवं श्यामलाल कॉलेज ने नॉर्थ कैप यूनिवर्सिटी को क्रमशः 2-0, 3-2, 2-0, 2-0 एवं 2-0 की बढ़त के साथ जीत हासिल की।

पत्थर से प्रहार कर महिला को किया अधमरा

आज का मुद्दा-नोएडा। मामूली विवाद में पिता-पुत्र समेत छह लोगों ने महिला पर पत्थर से हमला कर लहूलुहान कर दिया। महिला को मृत समझकर आरोपी घटनास्थल से भाग गए। करीब सात महीने बाद न्यायालय के आदेश पर मामले में छह आरोपियों के खिलाफ सेक्टर-39 थाने में केस दर्ज हुआ है। पुलिस नामजद आरोपियों से पूछताछ करने के बाद आगे की कार्रवाई करने की बात कह रही है। न्यायालय में दिए प्रार्थनापत्र में सदरपुर निवासी राज देवी ने बताया कि वह मजदूरी कर अपने परिवार का भरण और पोषण करती है। बीते साल 14 जून को हर रोज की तरह राज देवी काम पर गई और करीब दस बजे वापस लौट रही थीं। घर के पास सौरभ, उसके पिता मुरारीलाल, सौरभ के ससुर छोटू समेत छह लोगों ने घेर लिया और महिला के साथ गाली गलौज व बदसलूकी करने लगे। देखते ही देखते आरोपियों ने राज देवी के साथ मारपीट करनी शुरू कर दी। इसी दौरान सौरभ के ससुर ने टाइल का पत्थर उठाया और राज देवी के कमर और सिर पर प्रहार कर दिया। महिला को अधमरी हालत में छोड़कर आरोपी वहां से फरार हो गए। महिला की गली में रहने वाले लोग जब उधर से गुजरे तो उन्हें राज देवी लहूलुहान हालत में मिली। इसके बाद महिला को नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालत गंभीर होने के चलते घायल महिला को उपचार के लिए दिल्ली के सफदरगंज अस्पताल भेजा गया। कई दिन तक महिला का उपचार चला। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद महिला ने मामले की शिकायत स्थानीय पुलिस से की पर कोई सुनवाई नहीं है। ऐसे में उसने न्यायालय की शरण ली। अब इस मामले में सौरभ, मुरारीलाल, छोटू, अंकुर, गुड्डी और स्वीटी के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। अंकुर सौरभ का साला, गुड्डी सास और स्वीटी साली है।

एनआईए ने किंड्रिल कंपनी के साथ किया समझौता

आज का मुद्दा-नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (एनआईए) ने आईटी टेक्नोलॉजी इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास और प्रबंधन के लिए आईटी सर्विस प्रोवाइडर कंपनी किंड्रिल के साथ साझा समझौता पत्र यानी एमओयू पर साइन किया है। इस समझौते के तहत कंपनी को एयरपोर्ट संचालन के लिए एडवांस टेक्नोलॉजी के साथ 24 घंटे राउंड **ओ क्लाक आईटी सपोर्ट देना होगा।**

किंड्रिल 60 से अधिक देशों में काम करती है। ये कंपनी जटिल आईटी प्रणालियों के डिजाइन, निर्माण और प्रबंधन में माहिर है। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट में कंपनी का काम एक मजबूत और सुरक्षित आईटी प्रणाली को स्थापित करना, यहां साइबर जोखिम को कम करना। साथ ही यहां के आईटी बेस्ड सिस्टम को समझकर उसके रिस्क को कम करते हुए संचालित करना होगा। ताकि यहां आने वाले मुसाफिरों को बिना किसी असुविधा के डिजिटल सेवाओं का लाभ मिल सके।

रिएल टाइम एक्टिवटी को हैंडल करेगी

बता दे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट एक ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट है। इसलिए अनुबंधित कंपनी मुसाफिरों के लिए डिजिटल ऐप और आईटी से संबंधित सभी गतिविधियों को स्मूद करने और सिस्टम को एकीकृत करने में मदद करेगी। इसमें रियल टाइम सिस्टम को हैंडल करने के अलावा संचालन को प्रभावित करने वाले कारकों रोकने के लिए बुनियादी ढांचे का संचालन करना शामिल होगा।

एआई प्लेटफार्म का भी होगा यूज

साझेदारी के तह कंपनी किंड्रिल ब्रिज का उपयोग करेगी। ये एक एआई-संचालित प्लेटफॉर्म है। ये एआई ही एयरपोर्ट के आईटी हेल्प पर 24/7 नजर रखेगा। यह प्रणाली संभावित समस्याओं के बढ़ने से पहले उनका पता लगाने में मदद करेगी। जिससे यात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। इसके अलावा किंड्रील साइबर खतरों के लिए भी मजबूत तंत्र बनाएगा।

नाम परिवर्तन

I. DEEPAK NAYYAR S/O S.P.NAYYAR R/O C3..187 SECTOR 31 NOIDA (U.P) HAVE CHANGED MY NAME FROM DEEPAK KUMAR NAYYAR S/OSAT PAL NAYYAR FOR FUTURE REFERENCES.